E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 28 | प्रयागराज, शुक्रवार 03 अप्रैल, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ईरान जंग में जीत मिली,उनकी मिसाइल-ड्रोन क्षमता और नेवी खत्म

सेना हमारे कंट्रोल में, 2-3 हफ्ते में बड़ा हमला करेंगे

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने गुरुवार सुबह राष्ट्र के नाम संबोधन दिया। उन्होंने दावा किया कि अमेरिका को

ईरान जंग में जीत मिली है। साथ ही चेतावनी दी कि अमेरिका 2-3 हफ्ते में ईरान पर बड़ा हमला करेगा। ट्रम्प ने आगे कहा कि ईरान की मिसाइल-ड्रोन क्षमता और नौसेना खत्म हो गई है। सैन्य ताकत काफी कमजोर हो गई है। इस सैन्य अभियान का अहम मकसद पूरा होने वाला है। ट्रम्प ने यह भी चेतावनी दी कि अगर समझौता नहीं हुआ, तो अमेरिका ईरान को 'स्टोन एज, यानी पाषाणकाल' में भेज देंगे। हालांकि उन्होंने यह दावा भी किया कि ईरान में सत्ता परिवर्तन हो चुका है और नई लीडरशिप पहले से कम कट्टर है। ट्रम्प ने 19 मिनट का भाषण दिया। इसमें कोई नया ऐलान नहीं किया। वही बातें दुहराईं जो पिछले कुछ समय से कहते रहे हैं। उन्होंने युद्ध की लागत और इसके लंबा खिंचने से चिंतित अमेरिकियों से कहा कि वे इस संघर्ष को सही नजरिए से देखें। उन्होंने इराक (8 साल) और वियतनाम (19 साल) जैसे पिछले अमेरिकी युद्धों का जिक्र करते हुए कहा कि ईरान जंग तो अभी दूसरे महीने में ही पहुंची है। ट्रम्प ने ईरान से युद्ध खत्म करने के लिए बातचीत की मांग की, जबकि एक दिन पहले ही उन्होंने कहा था कि उन्हें समझौते की जरूरत नहीं है। उन्होंने होर्मुज स्ट्रेट संकट को लेकर कहा कि इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी दूसरे देशों को लेनी चाहिए। हालांकि, एक दिन पहले ही उन्होंने कहा था कि होर्मुज खोले बिना कोई समझौता नहीं होगा। ईरान ने एक बार इजराइल पर मिसाइल हमला किया है। इसके बाद उत्तरी इजराइल में सायरन बजने लगे। इजराइली सेना ने हमले की पुष्टि करते हुए अलर्ट जारी किया है। सेना के मुताबिक, ईरान की ओर से मिसाइल लॉन्च की गई हैं और खतरे को देखते हुए एयर डिफेंस सिस्टम सक्रिय कर दिया गया है। ईरान ने एक बार इजराइल पर मिसाइल हमला किया है। इसके बाद उत्तरी इजराइल में सायरन बजने लगे। इजराइली सेना ने हमले की पुष्टि करते हुए अलर्ट जारी किया है।सेना के मुताबिक, ईरान की ओर से मिसाइल लॉन्च की गई हैं और खतरे को देखते हुए एयर डिफेंस सिस्टम सक्रिय कर दिया गया है। ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट्स न्यूज एजेंसी के मुताबिक, 28 फरवरी से ईरान में अब तक कम से कम 1,606 आम नागरिकों की मौत हो चुकी है। इनमें कम से कम 244 बच्चे भी शामिल हैं।

आम आदमी पार्टी ने राघव चड्ढा को राज्यसभा में उप नेता के पद से हटाया, अशोक मित्तल को दी बड़ी जिम्मेदारी

नयी दिल्ली। आम आदमी गुरुवार को राघव चड्ढा को राज्यसभा में पार्टी के उपनेता

पार्टी ने राज्यसभा में अपने नेतृत्व में बड़ा बदलाव करते हुए राघव चड्ढा को डिप्टी लीडर के पद से हटा दिया है। उनकी जगह पर अशोक मित्तल को राज्यसभा में पार्टी का उपनेता नियुक्त किया गया है। जानकारी के मुताबिक, आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने के पद से हटाने का फैसला लिया। वहीं राघव चड्ढा की जगह अशोक मित्तल अब राज्यसभा में पार्टी की रणनीति और सदन के भीतर मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाने की जिम्मेदारी निभाएंगे। हालांकि, राघव चड्ढा राज्यसभा में सांसद की भूमिका में सक्रिय रूप से बने रहेंगे।

1972 के बाद पहली बार चांद के करीब पहुंचेंगे इंसान,10 दिन में चंद्रमा का चक्कर काटकर लौटेंगे 4 अंतरिक्ष यात्री

नासा का आर्टेमिस-II मिशन लॉन्च

वॉशिंगटन। अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने आज 2 अप्रैल को 'आर्टेमिस-2' मिशन लॉन्च किया।

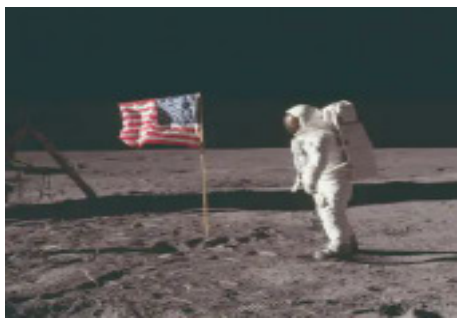

सुबह 4:05 बजे 'स्पेस लॉन्च सिस्टम' (एसएलएस) ओरियन स्पेसक्राफ्ट में 4 अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर चांद की ओर रवाना हुआ। फ्लोरिडा के केनेडी स्पेस सेंटर से ये लॉन्चिंग हुई। साल 1972 में 'अपोलो-17' के बाद यह पहला मौका है जब कोई इंसान पृथ्वी की निचली कक्षा (एलईओ) को पार कर चांद के करीब पहुंचेगा। चारों यात्री स्पेसक्राफ्ट से चांद के चारों ओर चक्कर लगाएंगे और फिर धरती पर लौटेंगे। यह मिशन 10 दिन का है। टेक-ऑफ से ठीक एक घंटा पहले 'लॉन्च अबॉर्ट सिस्टम' में कुछ ऐसी दिक्कतें आईं, जिनसे लॉन्चिंग पर खतरा मंडराने लगा था। यह वही सिस्टम है जिसके जरिए किसी खराबी की स्थिति में नासा के इंजीनियर अंतरिक्ष यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल सकते हैं। हालांकि इंजीनियरों ने इस समस्या को तेजी से सुलझा लिया। फिर सेफ्टी चेक के लिए काउंटडाउन घड़ी को 10 मिनट पर रोक दिया गया। इसके बाद रॉकेट के अलग-अलग जरूरी सिस्टम्स की जिम्मेदारी संभाल रहे इंजीनियरों की 'ओके' रिपोर्ट आई। फिर क्रू को संदेश मिला- 'आर्टेमिस II, मैं लॉन्च डायरेक्टर बोल रहा हूं, आप उड़ान के लिए तैयार हैं।' कमांडर रीड वाइजमैन ने जवाब दिया, 'हम पूरी मानवता की खातिर जा रहे हैं।' इसके तुरंत बाद चार आरएस-25 इंजन और दो रॉकेट बूस्टर चालू हुए और एस्ट्रोनॉट रवाना हो गए। तकनीकी दिक्कतः सिग्नल में आई रुकावट-कॉम्प्युकेशन इश्यूः उड़ान के करीब 51 मिनट बाद जब सैटेलाइट्स का हैंडओवर हो रहा था, तब ओरियन कैप्सूल का संपर्क कुछ देर के लिए टूट गया था। एकतरफा संपर्कः नासा के चीफ जेरेड इसाकमैन ने बताया कि मिशन कंट्रोल की आवाज तो क्रू को सुनाई दे रही थी, लेकिन क्रू का जवाब नीचे नहीं पहुंच पा रहा था। हालांकि, अब इस समस्या को सुलझा लिया गया है और सिस्टम सही काम कर रहा है। टेस्ट ड्राइवः पहली बार मैनुअल कंट्रोल-टेस्ट ड्राइवः पायलट विक्टर ग्लोवर ने करीब एक घंटे तक ओरियन कैप्सूल की 'टेस्ट ड्राइव' की। यह पहली बार था जब किसी ने इस कैप्सूल को मैनुअली कंट्रोल किया। भावुक पलः जब रॉकेट का ऊपरी हिस्सा ओझल हो रहा था, तब ग्लोवर ने कहा, 'ओह, उसे देखो - वाह!'

भारत को भर-भरकर सोना देता है अफ्रीकी देश, दिल्ली ने दिया 1000 टन चावल

नयी दिल्ली। भारत ने अफ्रीकी देश बुर्किना फासो को मानवीय मदद के तौर पर 1000 मीट्रिक टन चावल भेजे हैं। भारत की मदद का मकसद कमजोर समुदायों और विस्थापित

लोगों की खाद्य सुरक्षा में सहायता करना है। बुर्किना फासो ने हालिया समय में अस्थिरता और प्राकृतिक संकट का सामना किया है। इससे देश की आर्थिक हालत चरमराई हुई है। हालांकि बुर्किना फासो खनिज संपदा से संपन्न देश है। बुर्किना फासो को अफ्रीका के सबसे बड़ा सोना उत्पादक देशों में गिना जाता है। भारत को इस देश से बड़े पैमाने पर सोना आता है। भारत के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बुधवार को सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि विस्थापित लोगों की खाद्य सुरक्षा के लिए 1000 मीट्रिक टन चावल भेजा जा रहा है। यह वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए एक विश्वसनीय विकासात्मक, मानवीय सहायता और आपदा राहत साझेदार के रूप में भारत की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बिजनेस इनसाइडर के मुताबिक, बुर्किना फासो ने साल 2025 में 94 टन सोने का रिकॉर्ड उत्पादन किया है। बुर्किना फासो का सोने का उत्पादन 2024 के मुकाबले 2025 में 30 टन बढ़ा है। सरकार ने इसका श्रेय खनन क्षेत्र में सुधार और खदानों के राष्ट्रीकरण को दिया है। देश का ध्यान सोने की खदानों को व्यवस्थित करने पर है। बुर्किना फासो ने तेजी से नेशनल गोल्ड रिजर्व बढ़ाया हैं। सितंबर 2025 तक ये आउटपुट 29.5 टन पर पहुंचा है। बुर्किना फासो भारत के लिए सोने का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। भारत को बुर्किना फासो से सोना का निर्यात होता है। इस साल जनवरी में बुर्किना फासो से भारत में रिकॉर्ड 38.6 मिलियन डॉलर का सोना आया है। इसके अलावा सीसे से बने उत्पाद (824 हजार डॉलर) और काजू (166 हजार डॉलर) आए हैं। वहीं भारत से बुर्किना फासो को दवाएं और बायोलॉजिकल्स (3.43 मिलियन डॉलर), कारें (1.63 मिलियन डॉलर) और औद्योगिक मशीनरी (1.2एम डॉलर) भेजी गई है। बुर्किना फासो में सोने का उत्पादन आने वाले समय में और बढ़ सकता है। बुर्किना फासो के कम विकसित सोने के भंडार बिरिमियन ग्रीनस्टोन बेल्ट में स्थित हैं। ये बेल्ट देश के कुल जमीन के 22 फीसदी हिस्से को कवर करती हैं। इससे देश में भविष्य में खनन की काफी संभावना है। यहां फिलहाल खोजबीन जारी है। बुर्किना फाशो का गाओआ संभावित सोने के भंडार के लिए जाना जाता है। इलाके में बोरोमो ग्रीनस्टोन बेल्ट के भीतर पश्चिम बाटी शियर जोन में पाइराइट से जुड़ा ओरोजेनिक सोने का भंडार है। वहीं हौंडे पश्चिम अफ्रीका की सबसे ज्यादा सोने वाली बेल्ट में से एक है। यहां सानुतुरा प्रोजेक्ट जैसे बड़े प्रोजेक्ट चल रहे हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा सोना अमेरिका के पास है। अमेरिका के केंद्रीय बैंक के पास 8,133 टन सोना है। अमेरिका के बाद सबसे ज्यादा सोना जर्मनी के पास है। यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी के पास 3,352 टन सोना है। इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर इटली है जिसके पास 2,452 टन सोना है। फ्रांस के पास 2,452 टन सोना है। लिस्ट में पांचवें नंबर पर रूस है। रूस के केंद्रीय बैंक के पास 2,335 टन सोना है। चीन 2,290 टन सोने के साथ इस लिस्ट में छठे नंबर पर है। इसकी वैल्यू 408 अरब डॉलर है। चीन के बाद इस लिस्ट में स्विट्जरलैंड है। इस देश के पास 1040 टन सोना है। भारत इस लिस्ट में आठवें नंबर है। उसके पास करीब 878 टन सोना है। जापान के पास 846 टन सोना है। इस लिस्ट में दसवें नंबर पर तुर्की है। इस देश के पास 615 टन सोना है।

'डोनाल्ड ट्रंप बहुत सब्र नहीं करेंगे'- जेडी वेंस की पाकिस्तानी नेताओं से बातचीत

वॉशिंगटन। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कथित तौर पर ईरान के साथ चल रहे युद्ध को रोकने में भूमिका निभाने की ख्वाहिश जताई है। उन्होंने इस मुद्दे पर पाकिस्तान के नेताओं से बात की है। पाकिस्तान ने लगातार ईरान-अमेरिका के बीच मध्यस्थ बनने और बातचीत के लिए अपनी जमीन मुहैया कराने की इच्छा जताई है। ऐसे में वेंस की ओर से पाकिस्तानी मध्यस्थों से संपर्क साधा गया है। दावा किया गया है कि उन्होंने इस मामले में पाकिस्तान को चेताते हुए कहा है कि डोनाल्ड ट्रंप ज्यादा 'सब्र' नहीं करेंगे। रॉयटर्स ने मामले से परिचित एक सूत्र के हवाले से की गई अपनी रिपोर्ट में बताया है कि जेंस की पाकिस्तान के मध्यस्थों से बात हुई है। वेंस ने निजी तौर पर संकेत दिया है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप युद्धविराम के लिए तैयार हैं, बशर्ते अमेरिका की कुछ मांगें पूरी हों। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप के इस मामले में बहुत दिन धैर्य नहीं रखने की बात कही है। रिपोर्ट के मुताबिक, जेडी वेंस की ओर से ईरान-अमेरिका के बीच युद्धविराम पर बातचीत में बिना किसी शोर-शराबे के एक बड़ी

भूमिका निभाई जा रही है। माना जा रहा है कि पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में ईरान और अमेरिका के बीच बातचीत हो सकती है। इसमें खासतौर से जेडी वेंस का अहम रोल रह सकता है। ईरान की ओर से बातचीत के लिए अमेरिका के दूसरे नेताओं के मुकाबले जेडी वेंस पर भरोसा जताया गया है। ईरान ने आधिकारिक तौर पर अमेरिका के साथ बातचीत के दावों को खारिज किया है लेकिन कई रिपोर्ट ये दावा करती हैं कि तेहरान दूसरे किसी अमेरिकी नेता के बजाय जेडी वेंस के साथ बातचीत करना पसंद करेगा। ईरान और अमेरिका की लड़ाई दूसरे महीने में प्रवेश कर गई है। ये लड़ाई 28 फरवरी को इजरायल-अमेरिका की ओर से ईरान पर हमले के बाद शुरू हुई थी। इडरायल और अमेरिका ने ईरान में लगातार बमबारी की है। इससे ईरान की राजधानी तेहरान समेत बड़े शहरों में भारी तबाही हुई है। रिहायशी इलाकों में भी काफी नुकसान है। ईरान में युद्ध के शुरू होने के बाद से ना सिर्फ कई बड़ी इमारतें मलबे का ढेर बनी हैं बल्कि जान का भी बड़ा नुकसान हुआ है।

एमपी-यूपी समेत 5 राज्यों में बारिश का अलर्ट,हरियाणा के 7 जिलों में बारिश से फसल बर्बाद

लखनऊ। देश के पांच राज्यों में अगले तीन दिन मौसम में

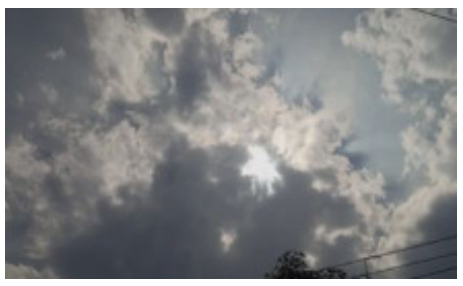

बदलाव रहेगा। मध्य प्रदेश के 30 और उत्तर प्रदेश के 40 जिलों में आज बारिश का अलर्ट है। बुधवार को उत्तर प्रदेश के लखनऊ और अमेठी समेत 20 शहरों में बारिश हुई। दिल्ली में गुरुवार सुबह बादल छाए रहे। इधर, राजस्थान में 2 अप्रैल से फिर एक नया वेदर सिस्टम एक्टिव होगा। इससे एक बार फिर बारिश का दौर शुरू होने का अलर्ट है। राज्य में पिछले 24 घंटे में 10 जिलों के मौसम में दोपहर बाद बदलाव देखने को मिला। हरियाणा में बारिश और ओले गिरने से 7 जिलों में फसलों को नुकसान पहुंचा। वहीं 100 गांवों में गेहूं, सरसों और चने की खड़ी फसलें खराब हो गईं। उत्तराखंड में रुद्रप्रयाग की सोनप्रयाग घाटी में ओले गिरे और केदारघाटी में बारिश हुई। वहीं जम्मू-कश्मीर के भद्रवाह घाटी के ऊपरी इलाकों में ताजा बर्फबारी के बाद पर्यटक पहुंचने लगे हैं।3-4 अप्रैल- जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश में हल्की बर्फबारी-बारिश और पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, यूपी, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश में भी बारिश के साथ ओलवृष्टि हो सकती है। असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा में बिजली गिरने की आशंका है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, केरल में तेज बारिश की आशंका है।लखनऊ और अमेठी समेत राज्य के 20 शहरों में बुधवार को हल्की बारिश हुई। कन्नौज में सबसे अधिक 29 मिमी वर्षा दर्ज की गई। मौसम विभाग के मुताबकि, 3 और 7 अप्रैल को लगातार दो वेस्टर्न डिस्टर्बेंस सक्रिय हो रहे हैं। इसका पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्यांचल और बुंदेलखंड में तेज असर देखने को मिलेगा। तेज हवा के साथ बारिश और ओले गिरने की संभावना।

अमित शाह ने खुद भरा जनगणना की पहली प्रक्रिया का फॉर्म

नयी दिल्ली। जनगणना-2027 शुरू हो चुकी है, जिसका आवास पर स्व-गणना का फॉर्म भरा। गृहमंत्री ने आगे कहा कि

हिस्सा बनते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने आज खुद अपने घर से इस प्रक्रिया का पहला फॉर्म भरा। फॉर्म भरने का वीडियो रिकॉर्ड कर अमित शाह ने इसे अपने सोशल मीडिया अकाउंट के जरिए शेयर भी किया। गृहमंत्री ने लोगों से अपील भी की कि वे भी इस तरह डिजिटल माध्यम से अपना जनगणना फॉर्म भरें। दरअसल, आज से जनगणना की पहली प्रक्रिया शुरू हुई है। इसके तहत ही गृहमंत्री अमित शाह ने 'आवास गणना' का फॉर्म भरा। गृहमंत्री ने बताया कि उन्होंने अपने दिल्ली स्थित भारत की विकास यात्रा को गति देने और प्रत्येक देशवासी तक सरकार की योजनाओं का समुचित लाभ पहुंचाने में इस प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। लोगों से इस प्रक्रिया में भाग लेने की अपील करते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि जल्द ही जनगणना की टीम आपके घर भी आएगी। आप भी इस राष्ट्रीय दायित्व में पूर्ण सहयोग करते हुए मांगी गई जरूरी जानकारियां प्रदान करें। उन्होंने एक लिंक शेयर करते हुए कहा कि आप लिंक के माध्यम से स्वयं भी फॉर्म भर सकते हैं।

भारत और पीएम मोदी को अमेरिका का दोस्ती का पैगाम,बैकफुट पर ट्रंप

नयी दिल्ली। मिडिल ईस्ट युद्ध में अमेरिका बुरी तरह से फंस चुका है। उसे इससे बाहर

निकलने का रास्ता नहीं दिख रहा। इसी दौरान अमेरिका को भारत और उसके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की याद आने लगी है। भारत में अमेरिकी दूतावास ने एक्स पर डोनाल्ड ट्रंप के एक साल से भी ज्यादा पुराने एक बयान को पोस्ट करके भारत और अमेरिकी साझेदारी का गुणगान किया है। भारत में अमेरिकी दूतावास ने ट्रंप के 13 फरवरी, 2025 के बयान और उनके और पीएम मोदी के ज्वाइंट प्रेस कांफ्रेंस की तस्वीर शेयर करते हुए लिखा है- 'एक ऐसा पल जो अमेरिका और भारत की साझेदारी की मजबूती और हमारे नेताओं के बीच घनिष्ठ रिश्ते को दिखाता है।' एक दिन पहले भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने अमेरिका जाकर दोनों देशों के रिश्तों की घनिष्ठता की दुहाई दी थी। फिर गुरुवार को अमेरिकी दूतावास को भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों की ऊंचाइयों वाले दिन याद आ रहे हैं। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि, क्या डोनाल्ड ट्रंप ईरान के साथ युद्ध से सम्मानजनक तरीके से बाहर निकलने के लिए भारत और खासकर पीएम मोदी से किसी तरह की मध्यस्थता की उम्मीद तो नहीं कर रहे हैं? क्योंकि जब पश्चिम एशिया में लड़ाई उनकी उम्मीद से काफी लंबी खिंच गई तब जाकर उन्होंने पहली बार पीएम मोदी को फोन मिलाया। उसी दौरान पाकिस्तान को बातचीत के लिए लगाया, लेकिन उसपर भरोसा करने के लिए कोई पक्ष तैयार नहीं था। भारतीय विदेश मंत्री ने संसद में पाकिस्तानी रोल को 'दलाली' बताया, जो कि उसका चरित्र जाहिर करता है। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसके अमेरिका और ईरान के साथ-साथ इजरायल, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के साथ भी अच्छे संबंध हैं।

ईरान युद्ध पर उधर डोनाल्ड ट्रंप की स्पीच, इधर जयशंकर हुए एक्टिव

नयी दिल्ली। अमेरिका-ईरान युद्ध को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने करीब 20 मिनट की स्पीच दी। उनके इस बयान के

आते ही भारतीय विदेश मंत्रालय और एक्टिव हो गया। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बृहस्पतिवार को संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की है। यह मुलाकात तब हुई है, जब एक दिन पहले ही पीएम मोदी ने अपने आवास पर सुरक्षा पर कैबिनेट कमेटी की बैठक बुलाई थी। इस मीटिंग में पश्चिम एशिया संकट को लेकर भारत की मौजूदा स्थितियों की समीक्षा की गई। दरअसल अमेरिकी राष्ट्रपति बता दिया ईरान युद्ध का पूरा प्लान- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार रात को दिए एक संबोधन में युद्ध को लेकर अपनी आगामी योजना का खाका खींच दिया है। ट्रंप ने बताया है कि अमेरिका जल्द ही ईरान के खिलाफ सारे सैन्य मकसद पूरा करने की ओर है।

हनुमान जन्मोत्सव पर निकाली गई भव्य ध्वज यात्रा, झूमे हनुमान भक्त,हनुमान जन्म उत्सव पर नगर के हनुमान मंदिर पर विभिन्न कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

हनुमान मंदिरों पर हुआ भव्य श्रृंगार, मंगला आरती एवं पूजन,संकट हरण श्री सिद्ध हनुमान मंदिर द्वारा निकाली गई भव्य ध्वज यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर गुरुवार को नगर के

हनुमान मंदिरों पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर नगर के मेन रोड पर रामअवतार उपवन में अवस्थित बाल हनुमान मंदिर में निर्मल केडिया के संयोजन में एवं सीएमओ ऑफिस के पास स्थित संकट मोचन मंदिर में पुजारी राजकुमार पांडे द्वारा हनुमान जी महाराज का भव्य श्रृंगार, मंगला आरती व पूजन किया गया और शीतला मंदिर के पास मेन रोड पर स्थित संकट हरण श्री सिद्ध हनुमान मंदिर से राम जी मोदनवाल के संयोजकत्व में भव्य ध्वज यात्रा निकाला गया। जिसमें भक्तजन हाथ में भगवा ध्वज लिए प्रभु श्री राम, बजरंगबली, हनुमान जी का जयकारा लगाते हुए चल रहे थे तथा दूसरी ओर भक्तिमय भजन की धुन पर स्त्रियां युवतिया,युवक थिरक रहे थे, ध्वज यात्रा के दौरान रथ पर बैठे हुए मर्यादा पुरुषोत्तम राम, माता जानकी एवं राम भक्त हनुमान के स्वरूप का दर्शन जहां नगर वासियों ने किया वहीं कुछ लोगों ने उनकी आरती भी उतारी। यह ध्वज यात्रा संपूर्ण नगर में भ्रमण करते हुए पुनः संकट हरण श्री सिद्ध हनुमान मंदिर पर जाकर संपन्न हुई। इस ध्वज यात्रा में मुख्य रूप से रामजी मोदनवाल, कृष्ण मुरारी गुप्ता, दीपक कुमार केसरवानी, रामजी मोदनवाल, संगम गुप्ता, प्रदीप मोदनवाल, सचिन, सानू, मनोज, दिलीप, शुभम, साहिल, सत्यम, स्वयं, अशोक, माया देवी, पूनम, ऋषि, गोविंद, उमेश, कमलेश सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

बुद्ध विहार जवाही पटेहरा में सम्राट अशोक महान का जन्मोत्सव भव्य रूप से संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद के पटेहरा स्थित बुद्ध विहार जवाही में बुधवार को सम्राट अशोक महान का जन्मोत्सव हर्षोल्लास और भव्यता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सम्राट अशोक की लोक कल्याणकारी नीतियों और उनके आदर्श शासन व्यवस्था को जन-जन तक पहुँचाना था। कार्यक्रम का आगाज भारतीय संविधान की प्रस्तावना के वाचन, दीप प्रज्वलन, त्रिशरण एवं पंचशील की परंपरा के साथ किया गया। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने तथागत बुद्ध एवं सम्राट अशोक के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ता मा. विकास शाक्य जी ने धम्म के महत्व पर जोर देते हुए कहा बुद्ध के शीलों को केवल सुनें नहीं, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। हमें अन्य धर्मों की आलोचना करने से बचना चाहिए, क्योंकि किसी की आलोचना करना स्वयं धम्म को कमजोर करने के समान है। मुख्य वक्ता जवाहर लाल मौर्य एवं संजय मौर्य ने सम्राट

अशोक की कुशल शासन व्यवस्था और उनके द्वारा प्रतिपादित नीतियों पर विस्तार से चर्चा की। रमेश गौतम (जिलाध्यक्ष, आप सोनभद्र) विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि सम्राट अशोक का शासन आम आदमी की सहूलियत और कल्याण को ध्यान में रखकर चलाया जाता था । वक्ता अंशुमान मौर्य ने संबोधन में बताया कि बौद्ध धम्म अपनाने के बाद भी अशोक का वैचारिक सीमा विस्तार जारी रहा, यही कारण है कि आज विश्व के अधिकांश देशों में बौद्ध धर्म का प्रभाव है। समाजसेवी विशाल सिंह 'विपुल' अतिथियों एवं दर्जनों उपासकों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किए साथ ही आगे भी सहयोग देने की बात की कार्यक्रम की अध्यक्षता रामप्रताप मौर्य ने की, जबकि संचालन घनश्याम मौर्य, स्वास्थ मौर्य एवं मीडिया प्रभारी शैलेन्द्र मौर्य द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सुरेंद्र मौर्य (प्रधान पटेहरा लालबत मौर्य और सुरेश मौर्य समिति संरक्षक), अजीत कांत निराला (जिलाध्यक्ष, सम्राट अशोक क्लब भारत), रामाज्ञा मौर्य (प्रधान भरुहा) सर्वजीत वुशवाहा (प्रबंधक), नेमचंद मौर्य, संदीप मौर्य, डॉ गुरु चरन मौर्य, डॉयरेक्टर न्यू उपकार हॉस्पिटल समेत क्षेत्र के सैकड़ों ग्रामीणों ने हिस्सा लिया और सम्राट अशोक के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लिया।

मा0 मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के निर्देश के क्रम में प्रदेश के प्रत्येक किसान को लाभ दिलाने के लिए फार्मर रजिस्ट्री का व्यापक अभियान किया गया शुरू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री बी0एन0 सिंह ने बताया है कि माननीय मुख्यमंत्री योगी

आदित्यनाथ जी ने प्रदेश में फार्मर रजिस्ट्री को व्यापक स्तर पर लागू करने के निर्देश जारी किए हैं। उन्होने कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी के निर्देश के क्रम में ग्राम पंचायत में विशेष शिविर आयोजित कर किसानों को फार्मर रजिस्ट्री से जोड़ा जाए, ताकि कोई भी पात्र किसान इस योजना से वंचित न रहे, जिलाधिकारी ने कहा है कि मा0 मुख्यमंत्री जी ने यह निर्देश दिये हैं कि राज्य सरकार फार्मर रजिस्ट्री को कृषि क्षेत्र में एकीकृत लाभ वितरण प्रणाली के रूप में विकसित कर रही है, उन्होने कहा कि जिससे किसान विभिन्न योजनाओं का लाभ एक ही पहचान के आधार पर सरल और व्यवस्थित तरीके से प्राप्त कर सके। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना सहित अन्य योजनाओं में यदि लाभार्थियों के नाम या अभिलेखों में कोई त्रुटि अथवा असंगति है, तो उसे आधार से लिंक कर प्राथमिकता के आधार पर संशोधित किया जाए। इसके साथ ही प्रत्येक पात्र किसान को किसान पहचान पत्र बनवाना सुनिश्चित किया जाए। मा0 मुख्यमंत्री जी ने निर्देश दिये है कि कृषि विभाग अपनी सभी योजनाओं को फार्मर रजिस्ट्री से जोड़ने के लिए आवश्यक तकनीकी व्यवस्था निर्धारित समय सीमा में तैयार करे और विभागीय पोर्टल को 01 मई 2026 तक पूर्ण रूप से क्रियाशील बनाया जाए, साथ ही, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य, सहकारिता एवं लघु सिंचाई जैसे सहयोगी विभाग 31 मई 2026 तक आवश्यक तैयारियां पूरी कर कृषि विभाग के साथ समन्वय स्थापित करें, ताकि सभी विभागों में एक समान व्यवस्था लागू हो सके। जिन कृषक बन्धुओं का फार्मर रजिस्ट्री अप्रैल 2026 तक पूरा नहीं होगा, उन्हें किसान सम्मान निधि और अन्य कृषि संबंधी योजनाओं का लाभ नहीं मिलेगा।

15 दिवसीय हनुमत प्रभात फेरी विगत 26 वर्षों से निरंतर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। श्री हनुमान ध्वजा प्रभात फेरी समिति के तत्वाधान में आयोजित 15 दिवसीय हनुमत प्रभात फेरी विगत 26 वर्षों से निरंतर, श्रद्धे या कौशल पति शर्मा जी के सानिध्य में सफलतापूर्वक संचालित होती आ रही है। उनके मार्गदर्शन में, संस्थापक अध्यक्ष के रूप में यह आयोजन निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। इस पावन कार्यक्रम में समिति के सभी

सम्मानित सदस्यों एवं विभिन्न संस्थाओं–ओम शिवा फाउंडेशन, माहेश्वरी समाज, मारवाड़ी समाज, , खत्री समाज, अग्रवाल समाज,राजस्थानी ब्राह्मण समाज एवं सभी संस्थाओं –का विशेष एवं सराहनीय योगदान रहा है। इस आयोजन को सफल बनाने में संयोजक श्री यतींद्र कथूरिया (सनी भैया) का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 15 दिवसी कार्यक्रम के प्रचार प्रसार मंत्री श्री सुरेश कुमार तुलस्यान जी ने अपना दायित्व बखूबी बहुत ही सुंदर ढंग से निभाया है। सोशल मीडिया पर प्रचार के रूप में श्री मनीष जी गिनोदिया एवं श्री महेश जी चौधरी ने बखूबी निभाया। आज शोभायात्रा का संचालन श्री राजेश गड्डानी जी ने बखूबी निभाया, विशेष रूप से श्री कृष्ण कुमार काबरा जी, श्री रघुदेव अग्रवाल जी, तथा समिति के कोषाध्यक्ष श्री विश्वनाथ पोद्दार जी, श्री अशोक कोठारी जी, श्री रमेश गोयल जी, श्री विजय मोदी जी, श्री राजेंद्र अग्रवाल जी , श्री संतोष अग्रवाल जी श्री दीपक श्रीवास्तव जी , शिवा जी एवं चन्दन चटर्जी जी एवं अन्य सभी श्रद्धालु भक्तगण एवं समिति सदस्यों का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। आज इस आयोजन के सफल संपन्न होने पर, जिन-जिन महानुभावों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति हम हृदय से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आगामी वर्षों में भी आप सभी का स्नेह, सहयोग एवं आशीर्वाद इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICE

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-
takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-
Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement

महापौर गणेश केसरवानी ने शवदाह स्थल का सीमांकन करने का आदेश दिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। महापौर गणेश केसरवानी ने शवदाह स्थल का सीमांकन करने का अधिकारियों को

निर्देश दिया।महापौर गणेश केसरवानी ने कहा कि यह कार्य प्रयागराज नैनी जनमानस के लिए अति महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य हुआ है पूरी ईमानदारी तत्परता कर्तव्य निष्ठा से कार्य होगा।शवदाह भूमि दान देने वाले बबलू पांडे के सामाजिक

कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा कर स्वागत और अभिनंदन महापौर गणेश केसरवानी ने करते हुए कहा यह एक पुनीत कार्य है मानव सेवा है नैनी क्षेत्र में शवदाह नहीं था जल्द से जल्द शिलान्यास का कार्यक्रम घोषित करके भूमि पूजन किया जाएगा इस अवसर पर वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव,सुविख्यात वरिष्ठ समाजसेवी व भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र क्षेत्रीय उपाध्याय सरदार पतविंदर सिंह,कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख संजय श्रीवास्तव,पार्षद अनूप पासी, अमित पांडे,विवेक पुरी,कार्तिकेय पुरी सहित दर्जनों भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

हनुमान जयंती पर ब्यौहारी में निकली भव्य शोभा रथ यात्रा, श्रद्धा और भक्ति का उमड़ा सैलाब

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) ब्यौहारी। एकल

अभियान संस्था द्वारा संचालित कार्यक्रम के अंतर्गत हनुमान जयंती के पावन अवसर पर नगर ब्यौहारी में भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र में श्रद्धा, भक्ति और उत्साह का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। शोभा यात्रा का शुभारंभ स्थानीय देवी मंदिर से किया गया, जो नगर के बनसुकली चरौहा एवं चुंगी नाका होते हुए राधा कृष्ण मंदिर पहुंची। यात्रा के दौरान श्रद्धालु भजन-कीर्तन करते हुए एवं जय श्री राम और जय हनुमान के उद्घोष लगाते हुए आगे बढ़े। मार्ग में जगह-जगह पुष्प वर्षा कर शोभा यात्रा का स्वागत किया गया।

राधा कृष्ण मंदिर पहुंचने के पश्चात सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ किया गया तथा भगवान श्री श्रद्धा के साथ मनाया गया। मंदिर परिसर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी और पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला महामंत्री इंजी. पुष्पेंद्र पटेल जी, एकल अभियान संच के सचिव श्री कमल खटीक जी, अध्यक्ष श्री रामसुशील पटेल जी, श्री जयप्रकाश बैस संच संगठन मंत्री रामज्ञान पटेल जी, वंदना वुशवाहा जी, सीमा पटेल जी सहित अनेक गणमान्य नागरिक, कार्यकर्ता एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम के माध्यम से समाज में धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक परंपरा एवं एकता का संदेश प्रसारित हुआ। आयोजन की सफलता में एकल अभियान संस्था के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

केजेएस सीमेंट प्लांट का मुख्य मार्ग बना ट्रांसपोर्टरों का अड्डा

ओवरलोड गाड़ियों से जाम, फर्जी टीपी का खेल जारी–राहगीरों की जान जोखिम में, जिम्मेदार मौन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। क्षेत्र के प्रमुख औद्योगिक

प्रतिष्ठान केजेएस सीमेंट प्लांट का मुख्य मार्ग इन दिनों अव्यवस्था और लापरवाही का प्रतीक बनता जा रहा है। हालात ऐसे हैं कि यह मार्ग अब आम आवागमन का रास्ता कम और ट्रांसपोर्टरों का स्थायी स्टैंड अधिक नजर आने लगा है। ओवरलोड लाइम स्टोन से भरी गाड़ियों की लंबी कतारें दिनभर सड़क पर खड़ी रहती हैं, जिससे यातायात व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। जीरो प्वाइंट बना जाम का केंद्र-मैहर हाईवे के मुख्य मार्ग स्थित केजेएस जीरो प्वाइंट पर स्थिति सबसे ज्यादा खराब है। यहां ओवरलोड ट्रकों के कारण सड़क अक्सर जाम रहती है। न तो वाहनों के सुचारू संचालन की व्यवस्था है और न ही किसी प्रकार का नियंत्रण नजर आता है। फर्जी टीपी का खुला खेल-स्थानीय सूत्रों के अनुसार, इस मार्ग पर थड़्ले से फर्जी ट्रांजिट पास (टीपी) काटे जाने का खेल भी जारी है। आरोप है कि बिना वैध दस्तावेजों के ही खनिज परिवहन किया जा रहा है, जिससे शासन को राजस्व का नुकसान भी हो रहा है। राहगीरों की जान खतरे में-इस अव्यवस्था का सबसे ज्यादा असर आम लोगों पर पड़ रहा है। इक्षापूर्ति मंदिर आने-जाने वाले श्रद्धालु, ग्रामीण और अन्य राहगीर रोजाना दुर्घटनाओं के खतरे के बीच गुजरने को मजबूर हैं। कई छोटे-बड़े हादसे भी सामने आ चुके हैं, लेकिन इसके बावजूद हालात में कोई सुधार नहीं हुआ है। प्रशासन और प्रबंधन पर उठे सवाल-स्थानीय लोगों का आरोप है कि पुलिस प्रशासन और कंपनी प्रबंधन की मिलीभगत या लापरवाही के कारण ट्रांसपोर्टरों के हौसले बुलंद हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि पुलिस अधीक्षक का आवागमन भी इसी मार्ग से होता है, बावजूद इसके समस्या जस की तस बनी हुई है। ग्रामीणों में आक्रोश, कार्रवाई की मांग- लगातार बिगड़ती स्थिति को लेकर ग्रामीणों और स्थानीय नागरिकों में भारी आक्रोश है। उनका कहना है कि यदि जल्द ही ओवरलोडिंग, अवैध परिवहन और सड़क जाम की समस्या पर सख्त कार्रवाई नहीं की गई, तो बड़ा जनआंदोलन किया जाएगा। बड़ा सवाल-क्या कानून और नियम सिर्फ कागजों तक सीमित रह गए हैं, या फिर जिम्मेदारों की अनदेखी से यह अव्यवस्था बढ़ती जा रही है?

रिटायर्ड शिक्षकों को भव्य विदाई, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से गूंजा विद्यालय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) घोरावल (सोनभद्र)। प्राथमिक विद्यालय बिसरेखी में 2 अप्रैल को वार्षिकोत्सव एवं सेवा निवृत्त शिक्षकों के सम्मान में भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बच्चों ने शानदार और अद्भुत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रधान अध्यापिका कौशर जहाँ सिद्दीकी के नेतृत्व में रिटायर्ड शिक्षकों राम प्रसाद, राम किसुन यादव, शिव राम, बच्चु मास्टर को भावभीनी विदाई दी गई। इस दौरान सभी अतिथियों, अभिभावकों को मोमेंटो और शाल देकर सम्मानित किया गया तथा बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। विद्यालय के समस्त स्टाफ को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में खंड शिक्षा अधिकारी, नायब तहसीलदार सहित उपस्थित अतिथियों ने बच्चों और विद्यालय स्टाफ की सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्या प्रसाद दुबे ने की, जबकि संचालन शिव शंकर और राजेश पटेल ने किया। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी घोरावल, समस्त एआरपी, न्याय पंचायत के शिक्षक, समस्त संकुल, राजेश वैश्य, नीलम गिरि, संगीता, राजीव सिंह, अजीत सिंह, दिनेश मिश्रा (रॉबर्ट्सगंज), हनुमंत, जितेंद्र, परम शीला, विमलेश, अमीन गाजला, विष्णुकांत, रामनिवास, कलीम, अशोक संयासी, प्रवीण कुमार सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

तीन वोटों का फैसला, 106 वोटों का इतिहास,लोटस विला आर डब्ल्यू ए चुनाव में लोकतंत्र का जीवंत चेहरा

करीबी मुकाबले, बड़ी जीत, निर्विरोध चयन और रिकॉर्ड भागीदारी के बीच उभरी नई नेतृत्व टीम, उम्मीदों और जिम्मेदारियों के साथ शुरू हुआ नया अध्याय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। शहरों की ऊंची-ऊंची इमारतों के बीच बसती हाउसिंग सोसाइटियां केवल रहने की जगह नहीं होतीं, बल्कि वे छोटे-छोटे लोकतांत्रिक ढांचे भी होती हैं, जहां हर निवासी एक नागरिक की तरह अपनी भूमिका निभाता है। लोटस विला सोसाइटी में हाल ही में संपन्न हुआ आर डब्ल्यू ए चुनाव 2026-27 इसी लोकतांत्रिक भावना का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया है। यह चुनाव सिर्फ पदों के चयन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें उत्साह, प्रतिस्पर्धा, पारदर्शिता और समुदाय की एकजुटता का अनोखा संगम देखने को मिला। मतदान से लेकर मतगणना तक हर चरण में ऐसा महसूस हुआ मानो एक बड़े लोकतांत्रिक उत्सव का आयोजन हो रहा हो। चुनाव के दिन सुबह की शुरुआत सामान्य दिनों से अलग थी। सोसाइटी के गेट से लेकर मतदान केंद्र तक हलचल साफ देखी जा सकती थी। लोग अपने घरों से निकलकर मतदान के लिए कतारों में खड़े नजर आए। कुछ अपने काम पर जाने से पहले वोट डालने पहुंचे, तो कुछ ने अपने परिवार के साथ इस प्रक्रिया में भाग लिया। बुजुर्गों के चेहरों पर अनुभव और जिम्मेदारी झलक रही थी, वहीं युवाओं में पहली बार वोट देने का उत्साह दिखा। महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय रही, जिन्होंने पूरे उत्साह के साथ मतदान किया। यह स्पष्ट था कि इस बार चुनाव को लेकर लोगों में जागरूकता और गंभीरता दोनों ही बढ़ी है। चुनाव आयोग द्वारा पूरी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और पारदर्शी तरीके से संपन्न कराया गया। मतदान केंद्र पर व्यवस्था, मतदाता सूची का सत्यापन, और शांतिपूर्ण माहौल ने यह सुनिश्चित किया कि हर व्यक्ति बिना किसी दबाव के अपना मत दे सके। मतगणना भी पूरी पारदर्शिता के साथ की गई, जहां उम्मीदवारों और उनके प्रतिनिधियों की मौजूदगी में हर वोट की गिनती की गई। यही कारण रहा कि परिणाम आने के बाद किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति नहीं बनी। इस चुनाव का सबसे रोमांचक और चर्चा में रहने वाला मुकाबला अध्यक्ष पद के लिए रहा। दिग्विजय शुक्ला और

सौरभ सचान के बीच सीधी टक्कर थी। दोनों उम्मीदवारों ने चुनाव प्रचार के दौरान अपनी-अपनी योजनाएं और दृष्टिकोण निवासियों के सामने रखे थे। मतदान के बाद जब मतगणना शुरू हुई, तो शुरुआत से ही मुकाबला बराबरी का नजर आया। हर राउंड के बाद अंतर कभी एक-दो वोटों का होता, तो कभी बराबरी की स्थिति बन जाती। जैसे-जैसे अंतिम परिणाम करीब आता गया, वैसे-वैसे उत्सुकता और तनाव बढ़ता गया। आखिरकार जब अंतिम आंकड़े सामने आए, तो दिग्विजय शुक्ला ने मात्र 3 वोटों के अंतर से जीत हासिल की। यह परिणाम न केवल रोमांचक था, बल्कि यह इस बात का प्रतीक भी बना कि लोकतंत्र में हर एक वोट कितनी अहम भूमिका निभाता है। जहां अध्यक्ष पद पर कांटे की टक्कर देखने को मिली, वहीं जनरल सेक्रेटरी पद पर एकदम विपरीत तस्वीर सामने आई। दुर्गा प्रसाद यादव और मयंक सक्सेना के बीच मुकाबला था, लेकिन परिणाम पूरी तरह एकतरफा रहा। दुर्गा प्रसाद यादव ने 106 वोटों के बड़े अंतर से जीत दर्ज की। यह जीत इतनी बड़ी थी कि इसे लोटस विला सोसाइटी के आर डब्ल्यू ए चुनावों के इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी जीत माना जा रहा है। इस परिणाम ने यह स्पष्ट कर दिया कि दुर्गा प्रसाद यादव को न केवल समर्थन मिला, बल्कि एक मजबूत जनाधार भी प्राप्त हुआ। यह जीत उनके नेतृत्व पर लोगों के विश्वास को दर्शाती है। उपाध्यक्ष पद के लिए इस बार दो विजेताओं का चयन हुआ। संजय सिंह और शशि प्रभा यादव दोनों ने इस पद पर जीत हासिल की। यह परिणाम इस बात का संकेत है कि सोसाइटी के लोग संतुलित और साझा नेतृत्व को प्राथमिकता दे रहे हैं। दोनों विजेता अब मिलकर सोसाइटी के विभिन्न कार्यों को संभालेंगे और विकास योजनाओं को आगे बढ़ाएंगे। इस चुनाव में कुछ पदों पर निर्विरोध चयन भी हुआ, जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण पहलू है। जॉइंट सेक्रेटरी पद के लिए चंद्र सिंह को बिना किसी विरोध के चुना गया। इसी प्रकार सह-कोषाध्यक्ष पद पर अजीत कुमार सिंह भी निर्विरोध निर्वाचित हुए। निर्विरोध चयन यह दर्शाता है कि इन उम्मीदवारों पर पहले से ही निवासियों का भरोसा था और उन्हें बिना किसी प्रतिस्पर्धा के जिम्मेदारी सौंप दी गई। कोषाध्यक्ष पदः जिम्मेदारी का भरोसा-कोषाध्यक्ष पद के लिए भी अच्छा मुकाबला देखने को मिला। इस पद पर नयन कुमार जायसवाल ने जीत हासिल की। सोसाइटी के वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी अब उनके कंधों पर होगी, जो एक महत्वपूर्ण भूमिका है। निवासियों की भूमिकाः चुनाव की असली ताकत-इस पूरे चुनाव में अगर किसी एक चीज ने सबसे ज्यादा प्रभाव डाला, तो वह थी निवासियों की सक्रिय भागीदारी। यह चुनाव केवल उम्मीदवारों का नहीं, बल्कि पूरे समुदाय का चुनाव बन गया। लोगों ने न केवल वोट डाला, बल्कि चुनाव प्रक्रिया को समझा, उम्मीदवारों से सवाल किए और अपने निर्णय सोच-समझकर लिए। यह एक परिपक्व और जागरूक समाज की निशानी है। नई आर डब्ल्यू ए के सामने चुनौतियां-नई टीम के सामने अब कई चुनौतियां होंगी। सोसाइटी की सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाना, साफ-सफाई और रखरखाव को सुनिश्चित करना, इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार करना और निवासियों की समस्याओं का समाधान करना उनकी प्राथमिक जिम्मेदारियों में शामिल होगा। इसके अलावा, पारदर्शिता बनाए रखना और सभी निवासियों को साथ लेकर चलना भी एक बड़ी चुनौती होगी। चुनाव के परिणामों के साथ ही अब एक नई शुरुआत हो चुकी है। निवासियों

को नई आर्थिक आर डब्ल्यू ए टीम से काफी उम्मीदें हैं। खासकर अध्यक्ष पद पर करीबी मुकाबले और जनरल सेक्रेटरी की ऐतिहासिक जीत के बाद, सभी की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि यह टीम अपने वादों को किस तरह पूरा करती है। लोटस विला सोसाइटी का आर डब्ल्यू ए चुनाव 2026-27 केवल एक चुनाव नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक कहानी है–एक ऐसे समाज की, जहां लोग जागरूक हैं, जिम्मेदार हैं और अपने भविष्य को लेकर गंभीर हैं। यह चुनाव दिखाता है कि अगर प्रक्रिया पारदर्शी हो और लोग सक्रिय रूप से भाग लें, तो किसी भी स्तर पर लोकतंत्र मजबूत हो सकता है। आने वाले समय में यह चुनाव निश्चित रूप से अन्य सोसाइटीज के लिए एक उदाहरण बनेगा।

महारैली से पहले गरजे डॉ. संजय निषाद,कहा- हक के लिए निर्णायक लड़ाई का वक्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री एवं निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ संजय निषाद

बृहस्पतिवार को नोएडा मीडिया क्लब पहुंचे, जहां उन्होंने पत्रकार वार्ता को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने 5 अप्रैल को नोएडा इंडोर स्टेडियम में आयोजित होने वाली निषाद पार्टी की महारैली की तैयारियों और उद्देश्यों पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. निषाद ने कहा कि पार्टी अब पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपने संगठन का विस्तार करने जा रही है और नोएडा की यह रैली उसी दिशा में एक बड़ा कदम होगी। उन्होंने कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि इन दलों ने मछुआ/कश्यप/निषाद समाज से केवल वोट लिया, लेकिन उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा। उन्होंने कहा कि निषाद पार्टी और भारतीय जनता पार्टी का गठबंधन बेहद मजबूत और पवित्र है, जो समाज के विकास और सम्मान के लिए कार्य कर रहा है। साथ ही उन्होंने बताया कि पार्टी द्वारा पहले गोरखपुर और प्रयागराज में सफल रैलियां आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें बड़ी संख्या में मछुआ समाज के लोगों ने भाग लिया और अपने अधिकारों की मांग उठाई। डॉ. निषाद ने जानकारी दी कि मेरठ में प्रस्तावित रैली को अब गौतमबुद्ध नगर में स्थानांतरित किया गया है। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि दनकौर क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से वीर एकलव्य से जुड़ा है, जहां उनके साथ छल का प्रसंग जुड़ा रहा है। इसी ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए रैली का स्थान बदला गया है। उन्होंने कहा कि 5 अप्रैल को महर्षि कश्यप जयंती के अवसर पर होने वाली यह सभा निषाद पार्टी की पश्चिमांचल में ताकत का प्रदर्शन करेगी और उन लोगों को जवाब देगी, जो पार्टी को केवल पूर्वांचल तक सीमित मानते हैं। निषाद पार्टी को आज प्रदेश में मछुआ समाज की सभी उपजातियों–केवट, मल्लाह, बिंद, कहार, धीवर, कश्यप, तुरैहा, रायकवार समेत अन्य पिछड़ी जातियों का भी समर्थन मिल रहा है, क्योंकि वे जातियां भी अपने आप को पूर्व की सरकारों से ठगा हुआ महसूस करती हैं। गौतमबुद्ध नगर में होने वाली रैली में जनपद के पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष श्री वीरेंद्र डाढा जी एवं हमारे युवा मोर्चा के सुमित गुर्जर, ई0 प्रवीण निषाद जी, रविन्द्रमणि निषाद, व्यास मुनि निषाद, पूरन सिंह कश्यप, प्रदीप कश्यप, जोगेंद्र विकल, के नेतृत्व में हजारों की संख्या में गुर्जर समाज के लोग भी शामिल होंगे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

पुलिस मुठभेड़ में लूटकांड का खुलासा, 5 आरोपी गिरफ्तार, 2 घायल

सोनभद्र में पुलिस का बड़ा एक्शनः मुठभेड़ के बाद लूटकांड का पर्दाफाश,अवैध हथियार व लूटा माल बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए सोनभद्र जिले में हुए सनसनीखेज लूटकांड का खुलासा कर दिया है। थाना अनपरा और शक्तिनगर की संयुक्त पुलिस टीम ने मुठभेड़ के बाद 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया, जिनमें से 2 आरोपी गोली लगने से घायल हो गए। घटना 27 मार्च 2026 की है, जब भारत फाइनेंस कंपनी के कलेक्शन एजेंट से चार बदमाशों ने लूट की वारदात को अंजाम दिया था। लुटेरों ने एजेंट

से रु63,000 नकद, टैबलेट, मोबाइल फोन, बायोमेट्रिक मशीन, कलेक्शन डायरी व अन्य दस्तावेज, लूटकर फरार हो गए थे। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में गठित टीम को 1 अप्रैल की रात सूचना मिली कि संदिग्ध बदमाश मोटरसाइकिल से क्षेत्र में आ रहे हैं। कुकरा पहाड़ी के पास घेराबंदी के दौरान बदमाशों ने पुलिस पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग शुरू कर दी । पुलिस ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की, जिसमें, 2 आरोपी घायल हो गए, मौके से अन्य आरोपियों को भी दबोच लिया गया. इस पूरे मामले पर अभिषेक वर्मा ने कहा सोनभद्र पुलिस अपराध के खिलाफ पूरी तरह सतर्क और प्रतिबद्ध है। इस लूटकांड का खुलासा हमारी टीम के समन्वित प्रयास और त्वरित कार्रवाई का परिणाम है। मुठभेड़ के दौरान पुलिस ने संयम और साहस का परिचय दिया।

गिरफ्तार अभियुक्तों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जा रही है और आगे भी ऐसे अपराधियों के खिलाफ अभियान जारी रहेगा। पुलिस ने कुल 5 आरोपियों को गिरफ्तार कियाः संजय यादव, पंकज श्रीवास्तव, धीरज यादव, हरिओम जायसवाल, चंद्रेश यादव (साजिशकर्ता) पूछताछ में खुलासा हुआ कि यह लूट डूपरी प्लानिंग के साथ की गई थीड, और मुख्य साजिशकर्ता पहले फाइनेंस कंपनी में काम कर चुका था। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से- 02 अवैध तमंचे, 02 जिंदा कारतूस व 02 खोखा कारतूस, रु28,500 नकद, 01 बायोमेट्रिक मशीन, 01 टैबलेट, 03 मोबाइल फोन, कलेक्शन डायरी व दस्तावेज, घटना में प्रयुक्त 02 मोटरसाइकिल बरामद किए हैं। मामले में पहले धारा 304(2) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था, जिसे जांच के दौरान धारा 309(4) व 317(2) बीएनएस में परिवर्तित किया गया। मुठभेड़ और बरामदगी के आधार पर आर्म्स एक्ट सहित अन्य धाराओं में भी केस दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष यादवेंद्र दत्त द्विवेदी कार्यालय पर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र।आज किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष यादवेंद्र दत्त द्विवेदी के कार्यालय पर, जिला महामंत्री किसान मोर्चा व पूर्व मंडल अध्यक्ष भाजपा श्री नारसिंह पटेल की अध्यक्षता में एक बैठक आहूत की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ भाजपा नेता पूर्व जिला उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश दुबे जी रहे बैठक में विविध संगठनात्मक विषयों पर व्यापक विचार विमर्श कर आगे की रणनीति तय की गई और आगामी 6 अप्रैल को पार्टी के स्थापना दिवस मनाने पर निर्णय ले कर कार्ययोजना तैयार किया गया, बैठक का संचालन पूर्व जिला मीडिया प्रभारी व जिला कार्यसमिति सदस्य भाजपा श्री अनूप तिवारी ने किया और 6 अप्रैल के कार्यक्रम का संयोजक पूर्व मंडल अध्यक्ष श्री उमाशंकर सिंह जी को तय किया गया, बैठक को संबोधित करते हुवे श्री ओमप्रकाश दुबे जी ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुवे हमे निचले स्तर तक जमीन के कार्यकर्ताओं को सक्रिय करना पड़ेगा भाजपा का स्थापना दिवस पर हम सभी पूरी ऊर्जा के साथ मिशन 2027 का बिगुल फूंकेंगे। बैठक में प्रमुख रूप से भाजपा पूर्व जिला मंत्री सुनील सिंह जी, किसान मोर्चा जिला उपाध्यक्ष राजेश मिश्रा जी, जिला मंत्री अभय दुबे जी, मंडल अध्यक्ष रामप्रवेश यादव जी, पूर्व महामंत्री चतरा विनय श्रीवास्तव जी, पूर्व मंडल अध्यक्ष मधुपुर सुनील पटेल जी, अचल सेठ जी आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत 'लसड़ा' विकास खंड रॉबर्ट्सगंज-जिला-सोनभद्र

पत्रांक / / टेंडर सूचना/2026/27 दिनांक-02-04-26

अल्पकालीन निविदा/कोटेशन सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत लसड़ा में वित्तीय वर्ष 2026-27 में मनरेगा / VB-GRAM G / राज्य वित्त/केन्द्रीय वित्त /SLWM/SBM/RGSA / SNA अन्य निधियो से प्राप्त धनराशि से निर्माण कराये जाने हेतु व्यापार कर विभाग आयकर में पंजीकृत फर्मों के द्वारा ग्राम पंचायत परिधि के अन्दर निम्न विवरणनुसार कार्यस्थल पर सामग्री आपूर्ति कराने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है / ईट प्रथम श्रेणी, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट, टैंकर क्रय, टैंकर मरम्मत बालू, डाला गिट्टी, सोलिंग गिट्टी, इंटरलॉकिंग ईट, सीमेंट, पटिया, टीन शेड, ऐजबेस्टेस सीट, शोचालय निर्माण सामग्री, PVC पाईप, बोल्डर, सरिया, स्टोन डस्ट,GSB, हैंडपंप सामग्री, हैंडपंप रिबोर / बोर, पेन्टिंग सामग्री, ई-रिक्शा, ढेला गाड़ी, सफाईकर्मी किट, ह्युम पाईप, सीमेन्ट बेंच, लोहे का (दरवाजा, खिड़की, एंगल, पाईप), बिजली वायरिंग सामग्री, समरसिबल पम्प, सोलर पंप, अन्य सामग्री। इच्छुक आपूर्तिकर्ता निविदा दिनांक-04/04/26 से 18-04-26 तक ग्राम पंचायत कार्यालय पर जमा कर सकते है। जिसे दिनांक 20-4-26 को 11 बजे निविदा दाताओ जो उपस्थित रहना चाहते है के समक्ष ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोला जायेगा। टेंडर फार्म शुल्क रू.500 जमा कर निर्धारित अवधि मे प्राप्त किया जा सकता है।

प्रतिबंध और शर्ते - 1 - निविदा की सभी दरें कर सहित लोक निर्माण विभाग की स्वीकृत दर से अधिक नहीं होनी चाहिए।2 -जमानत धनराशी और अन्य जानकारी हेतु ग्राम पंचायत कार्यालय से सम्पर्क कर सकते है। 3 खराब आपूर्ति की दशा में जमानत की राशि जब्त कर ली जायेगी। 4- सशर्त निविदा स्वीकार्य नहीं की जायेगी। 5 - बिना कारण बताये किसी भी समय निविदा निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी का होगा।

ग्राम प्रधान-
विकास खंड-रॉबर्ट्सगंज, सोनभद्र।

ग्राम प. सचिव-
विकास खंड-रॉबर्ट्सगंज, सोनभद्र।

श्वेता गुप्ता
ग्राम पंचायत अधिकारी ग्राम पंचायत लसड़ा
वि0 ख0 - राबर्ट्सगंज, सोनभद्र

शमी ने 5वीं बार पहली बॉल पर विकेट लिया,रिजवी ने सिक्स लगाकर मैच जिताया, पंत रनआउट हुए

एलएसजी-डीसी मैच के मोमेंट्स-रिकार्ड्स

लखनऊ। आईपीएल 2026 के पांचवें मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को 6 विकेट से हरा दिया। इकाना स्टेडियम में मोहम्मद शमी ने 5वीं बार पहली बॉल पर विकेट लिया। चेज के दौरान रिजवी ने सिक्स लगाकर मैच फिनिश किया। ऋषभ पंत का नॉन-स्ट्राइक एंड पर रनआउट होना अहम मोमेंट रहा। 1. लखनऊ का पहली पारी में लोएस्ट स्कोर-लखनऊ ने पहली पारी में अपना अब तक का सबसे कम स्कोर बनाया। टीम ने दिल्ली के खिलाफ 141 रन बनाए। इससे पहले यह रिकॉर्ड 153/8 का था, जो उन्होंने 2022 में पंजाब के खिलाफ पुणे में बनाया था।मोहम्मद शमी ने 5वीं बार अपनी पहली बॉल पर विकेट लिया। प्रवीण कुमार-

उमेश यादव जैसे बॉलर्स ने 3-3 बार यह कारनामा किया है। खास बात यह है कि शमी ने दो अलग-अलग टीमों के डेब्यू की पहली बॉल पर विकेट लिया। 2022 में गुजरात टाइटंस के लिए डेब्यू करते हुए उन्होंने केएल राहुल (एलएसजी) को पहली ही गेंद पर पर आउट किया था, वहीं लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए डेब्यू करते हुए भी उन्होंने केएल राहुल (डीएस) को पहली गेंद पर गोल्डन डक पर पवेलियन भेजा। मैच में 2 प्लेयर्स ने आईपीएल डेब्यू किया। दिल्ली ने श्रीलंका के ओपनर पाथुम निसांका को डेब्यू कैप सौंपी। वहीं लखनऊ के लिए अनकैप्ड भारतीय मुकुल चौधरी ने पहला आईपीएल मैच खेला।पहले ओवर में ऋषभ पंत ने मुकेश कुमार की गेंद पर चौका लगाकर अपना खाता खोला। ओवर की तीसरी गेंद फुल और स्टंप्स के पास थी। पंत ने सीधे बल्ले से सामने की ओर शॉट खेलकर चौका लगा दिया। 2.6 ओवर में मुकेश कुमार की गेंद पर ऋषभ पंत रन आउट हो गए। गेंद फुल लेंथ पर थी। मिचेल मार्श ने सीधा शॉट खेला। बॉलर एंड पर मुकेश के हाथ से बॉल लगकर स्टंप्स से टकरा गई। नॉन स्ट्राइकर एंड पर पंत क्रीज से बाहर थे। गेंद स्टंप्स से लगी और पंत को वापस लौटना पड़ा। 9वें ओवर में निकोलस पूरन बोल्ड हो गए। लुंगी एनगिडी ने स्लोअर ऑफ-कटर फेंकी। पूरन ऑन साइड में फ्लिक करना चाहते थे, लेकिन शॉट के वक्त उनका बैलेंस बिगड़ गया। गेंद बैट के नीचे से निकलकर सीधे स्टंप्स से जा टकराई।10वें ओवर में मुकुल चौधरी ने लगातार दो चौके लगाकर आईपीएल में खाता खोला। कुलदीप यादव की गेंद पर मुकुल ने स्वीप शॉट खेला और गेंद फाइन लेग की दिशा में भेज दी। अगली गेंद पर भी मुकुल के बैट का किनारा लेकर बॉल बाउंड्री की तरफ निकल गई। तीसरे ओवर में मोहसिन खान ने विकेट लेकर कोई रन नहीं दिया। उन्होंने तीसरी गेंद पर नीतीश राणा को अब्दुल समद के हाथों कैच कराया। इसके बाद इम्पैक्ट सब के तौर पर समीर रिजवी आए। मोहसिन ने बाहर की ऑफ स्टंप लाइन रखकर रिजवी को डिफेंस करने पर मजबूर कर दिया। 13.5 ओवर में समीर रिजवी ने चौका लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया। मार्करम की शॉर्ट गेंद ऑफ स्टंप के बाहर थी, रिज़वी ने बैकफुट पर जाकर पॉइंट के पीछे कट शॉट खेला। बॉल बाउंड्री के बाहर चौके के लिए चली गई। 18वें ओवर की पहली गेंद पर समीर रिजवी ने अब्दुल समद के खिलाफ सिक्स लगाया। इसी के साथ उन्होंने टीम को 6 विकेट से जीत दिला दी। रिजवी ने समद की बॉल को डीप मिडविकेट के ऊपर भेज दिया।

गर्मियों में जल्दी खराब होता खाना,फूड स्टोरेज के 24 टिप्स

लखनऊ। गर्मियों में खाने-पीने की चीजें जल्दी खराब होती हैं। फूड स्टोरेज की छोटी-छोटी गलतियों को नजरअंदाज करने से फूड पॉइजनिंग, डायरिया और पेट से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। अपनाना जरूरी है, ताकि खाना सुरक्षित, ताजा और हेल्दी बना रहे। सवाल- कैसे पता चलेगा कि कोई फूड खराब हो गया है? जवाब- ये कोई रॉकेट साइंस नहीं है। अमूमन खाने की महक, टेक्सचर

ऐसे में सही फूड स्टोरेज बीमारियों से बचाव का अहम हिस्सा है। इसलिए आज जरूरत की खबर में जानेंगे कि- गर्मियों में फूड स्टोरेज के बेसिक रूल्स क्या हैं? किन गलतियों से बचना चाहिए? अलग-अलग फूड आइटम्स को कैसे स्टोर करें? विषय को समझेंगे-एक्सपर्ट- डॉ. पूनम तिवारी, सीनियर डाइटीशियन, डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से -सवाल- गर्मियों में खाने-पीने की चीजों का सही स्टोरेज क्यों जरूरी है? जवाब- गर्मियों में ज्यादा तापमान होने पर बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं। इससे खाने में टॉक्सिन्स बन सकते हैं। सही स्टोरेज (फ्रीजिंग, एयरटाइट कंटेनर) बैक्टीरिया की ग्रोथ को धीमा कर सकते हैं या रोक सकते हैं, जिससे खाना सेफ रहता है।सवाल- गर्मियों में खाना जल्दी खराब क्यों होता है? जवाब- इसके लिए कई फैक्टर्स जिम्मेदार हैं- ज्यादा तापमान बैक्टीरिया की ग्रोथ तेज करता है।गर्मी में खाने में मौजूद फैट्स तेजी से ऑक्सिडाइज्ड होने लगते हैं, जिससे ऑयली फूड्स में बदबू आने लगती है। हाई टेम्परेचर प्रोटीन ब्रेकडाउन को तेज कर देता है। खासकर दूध, दाल, मीट जैसे प्रोटीन-रिच फूड में ये प्रक्रिया जल्दी होती है, जिससे स्मेल बदलने लगती है। गर्मियों में ह्यूमिडिटी (नमी) ज्यादा होती है, जिससे पके भोजन, ब्रेड और फल जैसी चीजों में फंगस और यीस्ट तेजी से पनपते हैं। बार-बार तापमान बदलने (जैसे बाहर रखना, फिर फ्रिज में रखना) से खाना जल्दी खराब होता है। सवाल- गर्मियों में फूड स्टोरेज के बेसिक रूल्स क्या हैं? जवाब- गर्मियों में कुछ बेसिक स्टोरेज रूल्स से पता चल जाता है कि ये खराब हो चुका है। लेकिन- गर्मी के मौसम में सिर्फ स्मेल, रंग, टेक्सचर पर भरोसा न करें। अगर तापमान 40 डिग्री से ऊपर है और खाना तीन घंटे से ज्यादा बाहर रखा है तो उसे न खाएं। खाने का स्वाद थोड़ा भी अजीब लगे तो उसे न खाएं। सवाल- गर्मियों में अलग-अलग फूड को स्टोर करने का सही तरीका क्या है? जवाब- नीचे हर तरह के फूड आइटम के स्टोरेज का तरीका डिटेल में पढ़ें। सब्जियां, हरी पत्तेदार सब्जियों को पहले अच्छे से धोकर सुखाएं। फिर पेपर टॉवल में लपेटकर फ्रिज में रखें। कटी हुई सब्जियों को एयरटाइट कंटेनर में करके फ्रिज में रखें। 24 घंटे के भीतर इस्तेमाल करें। वहीं आलू, प्याज, लहसुन जैसी जड़ वाली सब्जियां फ्रिज में न रखें। उसे ठंडी, सूखी जगह पर रखें। फल, कटे हुए फल तुरंत खा लें या फ्रिज में एयरटाइट बॉक्स में रखें। अंगूर और बेरीज जैसे फल धोकर और अच्छी तरह सुखाकर ही फ्रिज में रखें। पका हुआ खाना पका हुआ खाना 2 घंटे के अंदर फ्रिज में रख दें। सामान्य टेंपरेचर पर आने के बाद ही फ्रिज में रखें। इसे 1-2 दिन के भीतर खा लेना ही बेहतर होता है। दूध -दूध को उबालकर ठंडा करें। ठंडे दूध को फ्रिज के अंदर वाले शेल्फ में रखें। दही-दही को हमेशा ढककर फ्रिज में रखें। दही निकालते समय साफ चम्मच का इस्तेमाल करें। नॉन-वेज फूड- गर्मियों में नॉन-वेज फूड फ्रिज में 1-2 दिन से ज्यादा न रखें। अगर लंबे समय के लिए स्टोर करना हो तो इन्हें फ्रीजर में रखें। हमेशा अलग एयरटाइट कंटेनर में रखें, ताकि दूसरे खाने के साथ क्रॉस-कंटैमिनेशन न हो। ब्रेड और बेकरी आइटम -ब्रेड और बेकरी आइटम को सूखी जगह पर रखें। अगर ज्यादा दिनों तक स्टोर करना हो तो फ्रीज करें। ड्राई फूड-ड्राई फूड्स को एयरटाइट कंटेनर में रखें। नमकीन और बिस्कुट जैसे स्नैक्स अच्छी तरह सील करके और नमी से दूर रखें।ड्रिंक्स-फ्रेश जूस को तुरंत पी लें। अगर स्टोर करना हो तो 24 घंटे के अंदर यूज कर लें। पानी को हमेशा ढककर रखें। पानी को प्लास्टिक की बोतलों में लंबे समय तक स्टोर न करें। अचार और सॉस-अचार को सूखे चम्मच से निकालें। इसे समय-समय पर धूप में रखें। सॉस को फ्रिज में रखना बेहतर है। चॉकलेट और मिठाइयां चॉकलेट को ठंडी और सूखी जगह पर रखें। मिठाइयों को फ्रिज में स्टोर करें। मिठाइयों को ठंडी और सूखी जगह पर रखें। मिथ 2: बचा हुआ खाना फ्रिज में कई दिनों तक सुरक्षित रहता है। फैक्टः गर्मी में खाना जल्दी खराब होता है। पका भोजन 24 से 48 घंटों के भीतर खा लेना चाहिए। दोबारा अच्छी तरह गरम करके ही खाना चाहिए। मिथ 3: फ्रिज में हर जगह तापमान बराबर होता है। फैक्टः फ्रिज के ऊपरी शेल्फ का तापमान सबसे कम होता है, जबकि दरवाजे का हिस्सा सबसे कम ठंडा होता है। मिथ 4: बोतल बंद चीजें खराब नहीं होतीं। फैक्टः डिब्बाबंद फूड खोलने के बाद फ्रिज में रखना जरूरी है। बाहर खुला रखने से ये जल्दी खराब हो सकता है। गर्मियों में फूड स्टोरेज से जुड़े कुछ कॉमन सवाल और जवाब-सवाल- गर्मियों में फ्रिज को किस टेंपरेचर पर सेट करना चाहिए? जवाब- फ्रिज का तापमान 1-4से. और फ्रीजर -18से. के आसपास रखना चाहिए। सवाल- क्या बासी खाने को गर्म करके खाना सही है? जवाब- हां, लेकिन दो दिन से ज्यादा नहीं। खाने को 1 बार से ज्यादा रीहीट न करें। फ्रिज से सिर्फ उतना खाना निकालें, जितना खत्म हो जाए। अगर रीहीट किया खाना बच जाए तो उसे फेंक दें। सवाल- क्या फूड स्टोरेज के साथ सफाई का ध्यान रखना जरूरी है? जवाब- हां, गंदे हाथ, बर्तन या फ्रिज से बैक्टीरिया तेजी से फैलते हैं और खाना जल्दी खराब हो सकता है। सवाल- क्या गर्मियों में माइक्रोवेव में खाना गर्म करना सुरक्षित है? जवाब- हां,

2-3 दिन के भीतर खत्म कर दें। सवाल- गर्मियों में फूड स्टोरेज से जुड़े मिथ और फैक्ट क्या हैं? जवाब- गर्मियों में फूड स्टोरेज को लेकर कई कॉमन प्रैक्टिस हैं, जिन्हें लोग बिना जांचे-परखे सच मान लेते हैं। ऐसे में जरूरी है कि सही और गलत के फर्क को समझा जाए। मिथ 1: सभी फल और सब्जियां फ्रिज में रखने से ताजी रहती हैं। फैक्टः ऐसा नहीं है। आलू, प्याज, लहसुन और एवाकाडो वगैरह फ्रिज में रखने से जल्दी खराब हो सकते हैं। इन्हें यह पूरी तरह सुरक्षित है। लेकिन खाने को पूरी तरह से और एकसमान गर्म करें। सवाल- क्या लंबे समय तक फ्रिज में रखा खाना नुकसान पहुंचा सकता है? जवाब- अगर फ्रिज का तापमान 3-4 डिग्री पर सेट है तो उसके अंदर रखी कच्ची चीजें एक हफ्ते तक सुरक्षित रहती हैं। पका खाना 3 से 4 दिन तक सुरक्षित रहता है। लेकिन गर्मियों में फ्रिज में भी चीजें बहुत लंबे समय तक नहीं रखनी चाहिए।

रक्तदान के 6 बड़े मिथ और सच्चाई, एक्सपर्ट से जानें इसके फायदे, कौन कर सकता है रक्तदान

नयी दिल्ली। यह दिन महान वैज्ञानिक कार्ल लैंडस्टीनर की याद में मनाया जाता है। उन्होंने एबीओ ब्लड ग्रुप सिस्टम की खोज कर मेडिकल साइंस को नई दिशा दी थी। रक्तदान एक ऐसा मानवीय कार्य है, जो किसी जरूरतमंद को नई जिंदगी दे सकता है। हालांकि आज भी समाज में इससे जुड़ी कई गलतफहमियां मौजूद हैं। कई लोगों को लगता है कि खून देने से शरीर कमजोर हो जाएगा, चक्कर आएंगे या सेहत बिगड़ जाएगी। वहीं कुछ मानते हैं कि सिर्फ जवान, ताकतवर या पूरी तरह फिट लोग ही रक्तदान कर सकते हैं। तो चलिए, आज जरूरत की खबर में बात ब्लड डोनेशन को लेकर प्रचलित मिथक और उनकी सच्चाई के बारे में। साथ ही जानेंगे कि- कौन लोग ब्लड डोनेट कर सकते हैं? स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, भारत में हर साल करीब 1.46 करोड़ यूनिट ब्लड की जरूरत होती है, लेकिन करीब 10 लाख यूनिट की कमी बनी रहती है। इस कमी का बड़ा कारण सिर्फ जागरूकता की कमी ही नहीं है, बल्कि रक्तदान को लेकर फैली अनेक भ्रांतियां और डर भी हैं।

बहुत से लोग गलत धारणाओं के कारण इस जरूरी और जीवनरक्षक कार्य से दूर रहते हैं।ब्लड डोनेशन से पहले डॉक्टर या मेडिकल स्टाफ कुछ जरूरी जांच करते हैं। जैसेकि- हार्टबीट सामान्य है या नहीं। बॉडी टेम्परेचर और ब्लड प्रेशर सामान्य है या नहीं। ब्लड में आयरन की मात्रा ठीक है या नहीं। इन जांचों से ब्लड डोनर और ब्लड रिसीवर दोनों सुरक्षित रहते हैं। ये जांचें आमतौर पर कुछ मिनटों में हो जाती हैं।नियमित रूप से ब्लड देने से शरीर में आयरन का संतुलन बना रहता है। ज्यादा आयरन जमा होने से हार्ट अटैक का खतरा बढ़ सकता है। साथ ही इससे ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल भी कंट्रोल में रहता है, जिससे हार्ट हेल्थ बेहतर होती है। एक और बड़ा फायदा यह है कि ब्लड डोनेशन से पहले बेसिक हेल्थ चेकअप होता है। इसमें वजन, ब्लड प्रेशर, हीमोग्लोबिन और ब्लड में किसी इन्फेक्शन की जांच की जाती है। इससे अपनी सेहत की शुरुआती जानकारी मिलती रहती है, जो आमतौर पर हम रोजमर्रा की जिंदगी में नहीं करवाते हैं।हर कोई ब्लड डोनेट नहीं कर सकता है। इसके लिए कुछ जरूरी शर्तें होती हैं, जो यह तय करती हैं कि आप ब्लड डोनेट के लिए फिट हैं या नहीं। उदाहरण के लिए आपकी उम्र, वजन, सेहत और हाल की मेडिकल हिस्ट्री को ध्यान में रखा जाता है। ब्लड डोनेट एक सरल प्रक्रिया है, लेकिन इसके पहले और बाद में कुछ छोटी-छोटी सावधानियां बरतनी जरूरी हैं। इससे न सिर्फ डोनर सुरक्षित रहता है, बल्कि रक्तदान का अनुभव भी बेहतर बनता है।ब्लड डोनेशन की प्रक्रिया को पूरी तरह सुरक्षित और इन्फेक्शन-फ्री बनाए रखने के लिए ब्लड बैंक कई सख्त सेफ्टी प्रोटोकॉल का पालन करता हैं।डिस्पोजेबल सुई और कलेक्शन किट का इस्तेमाल हर डोनर के लिए एक बार इस्तेमाल होने वाली सुई और ब्लड बैग का प्रयोग किया जाता है, जिसे डोनेशन के तुरंत बाद सुरक्षित तरीके से नष्ट कर दिया जाता है। इससे इन्फेक्शन का कोई खतरा नहीं रहता है।रक्तदान से पहले डोनर का वजन, तापमान, ब्लड प्रेशर, पल्स और हीमोग्लोबिन की जांच की जाती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि डोनर फिट है।ब्लड डोनेशन से पहले और बाद में इस्तेमाल किए जाने वाले सभी उपकरणों को सैनिटाइज किया जाता है। स्टाफ भी हैंड ग्लव्स पहनता है।ब्लड कलेक्शन का पूरा काम प्रशिक्षित डॉक्टरों और नर्सों की निगरानी में किया जाता है ताकि किसी भी इमरजेंसी को तुरंत संभाला जा सके।डोनेट किए गए हर यूनिट ब्लड की एचआईवी, हेपेटाइटिस बी और सी, मलेरिया, सिफलिस जैसी बीमारियों के लिए जांच की जाती है, ताकि रिसीवर को सुरक्षित ब्लड मिल सके।किसी भी तरह की प्रतिक्रिया जैसे कमजोरी, चक्कर आने की स्थिति में तुरंत मदद के लिए ब्लड बैंक में प्राथमिक चिकित्सा और जरूरी दवाएं उपलब्ध रहती हैं।

जरूरत की खबर- इयरबड्स से हुआ हियरिंग लॉस:कानों के लिए खतरनाक, फॉलो करें '60-60' रूल, जानें सेफ लिसनिंग गाइडलाइंस

नयी दिल्ली। हाल ही में मशहूर मेकअप आर्टिस्ट आरुषि ओसवाल ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर की। इसमें उन्होंने बताया कि इयरबड्स के लगातार 8 घंटे इस्तेमाल के बाद उनकी एक कान की सुनने की क्षमता 45फीसदी तक कम हो गई। एक बार चली जाए तो वापस आना मुश्किल है।इन-इयर डिवाइस आवाज को सीधे कान के अंदर भेजते हैं। अगर तेज आवाज में और लंबे समय तक इन्हें इस्तेमाल किया जाए तो इससे सुनने की क्षमता टेम्परेरी या परमानेंट कम हो सकती है। दरअसल रोजाना

85 डेसीबल से ज्यादा तेज आवाज लंबे समय तक सुनने से कान के अंदर मौजूद नाजुक 'हेयर सेल्स' (बाल जैसी कोशिकाएं) खराब हो सकती हैं। यही सेल्स आवाज का दिमाग तक सिग्नल पहुंचाने का काम करती हैं। एक बार ये खराब हो जाएं तो दोबारा नहीं बनती हैं। इस वजह से लगातार तेज आवाज में सुनने की आदत से स्थायी सुनने की हानि हो सकती है, जिसे मेडिकल भाषा में सेंसरिन्यूरल हियरिंग लॉस कहा जाता है। नोएडा के शारदा हॉस्पिटल के ईएनटी, हेड एंड नेक सर्जरी डिपार्टमेंट के हेड डॉ. रोहित उन्होंने एक यात्रा के दौरान पूरे दिन इयरबड्स कान में लगाए रखे थे। अगली सुबह उन्हें सुनने में परेशानी महसूस हुई। इसके बाद डॉक्टर से संपर्क किया। डॉक्टर ने बताया कि यह 'सडन सेंसोरीन्यूरल हियरिंग लॉस' का है। यह ऐसी स्थिति है, जिसमें अचानक सुनने की क्षमता कम हो जाती है और इलाज में देर होने पर यह स्थायी भी हो सकती है। आरुषि ने अपनी पोस्ट के जरिए यह अपील की कि लोग ईयरबड्स या हेडफोन का जरूरत से ज्यादा और लगातार इस्तेमाल न करें क्योंकि सुनने की क्षमता सक्सेना बताते हैं कि इयरबड्स जैसी डिवाइस 100 डेसिबल तक की आवाज निकाल सकती हैं, जो मोटरसाइकिल या कार हॉर्न जितनी तेज होती है। जबकि सामान्य बातचीत सिर्फ 60 डेसिबल के करीब होती है।सिर्फ 50 मिनट तक 95 डेसिबल की आवाज (मोटरसाइकिल का शोर) भी सुनने की क्षमता को नुकसान पहुंचा सकती है। 100 डेसिबल की आवाज (पास से गुजरती ट्रेन या कार हॉर्न) सिर्फ 15 मिनट में असर डाल सकती है। मायो क्लिनिक के अनुसार, 12 से 35 साल के करीब 24% लोग बहुत तेज म्यूजिक सुनते हैं, जिससे हियरिंग लॉस का खतरा बढ़ जाता है।सडन सेंसरिन्यूरल हेयरिंग लॉस एक ऐसी स्थिति है, जिसमें एक या दोनों कानों से अचानक सुनाई देना कम हो जाता है। यह सुनने की हानि आमतौर पर तीन दिन के अंदर होती है और ज्यादातर मामलों में एक ही कान प्रभावित होता है। इसमें कान के अंदर की सुनने वाली नस (ऑडिटरी नर्व) या कोक्लिया के नाजुक 'हेयर सेल्स' को नुकसान पहुंचता है। इसके लक्षण आमतौर पर ये होते हैं।हम रोजमर्रा की जिंदगी में कई तरह की आवाजों से घिरे रहते हैं। जैसे ट्रैफिक, म्यूजिक, मशीनों का शोर या इयरफोन की तेज ध्वनि। इन आवाजों की तीव्रता एक सीमा से ज्यादा हो जाए तो धीरे-धीरे हमारी सुनने की शक्ति पर असर डाल सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अलग-अलग डेसिबल लेवल की आवाजों के लिए सप्ताह में कितना समय सुरक्षित है।डॉ. रोहित सक्सेना बताते हैं कि इयरबड्स या लाउड पार्टी जैसी एक्टिविटीज से बचें, जो सुनने की क्षमता पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं। आजकल लोग लंबे समय तक हेडफोन या इयरफोन का इस्तेमाल करते हैं। यात्रा, वर्कआउट या काम के दौरान यह बहुत आम है। अगर यह आदत सही तरीके से न अपनाई जाए तो धीरे-धीरे सुनने की क्षमता पर असर पड़ सकता है।डेसीबल यानी आवाज की तीव्रता मापने के लिए आप अपने स्मार्टफोन में 'साउंड मीटर' या जैसे एप डाउनलोड कर सकते हैं। ये आपके फोन के माइक से आवाज को मापते हैं और बता देते हैं कि कितनी तेज है।अगर आपके इयरबड्स की आवाज पास बैठे व्यक्ति को सुनाई दे रही है या म्यूजिक सुनते वक्त आपको बाहर की आवाजें नहीं आ रहीं हैं तो समझिए आवाज बहुत तेज है। अगर सुनने के बाद कान में घंटी जैसी आवाज सुनाई दे तो यह भी नुकसान की निशानी है।अगर आप तेज आवाज में काम करते हैं तो यह आपकी सुनने की क्षमता के लिए जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए अपने कानों की सुरक्षा के लिए ये टिप्स अपनाएं- हमेशा इयरप्लग्स या इयरमफ्स जैसे हियरिंग प्रोटेक्शन डिवाइस का इस्तेमाल करें। ये आपके कानों को तेज आवाज से बचाते हैं। अगर संभव हो तो अपनी वर्कस्टेशन को उस मशीन या क्षेत्र से दूर शिफ्ट करें, जहां सबसे ज्यादा शोर होता है। लंच, चाय या बाकी ब्रेक ऐसी जगह लें, जहां शोर कम हो ताकि कानों को थोड़ा आराम मिले। वर्क के बाद तेज म्यूजिक, फायरवर्क्स या लाउड पार्टी जैसी एक्टिविटीज से बचें, जो सुनने की क्षमता पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं।

कोविड के बाद बढ़ रहे हेपेटाइटिस केसेज:इसके लक्षणों को लेकर रहें सचेत

नयी दिल्ली। केरल में हेपेटाइटिस के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। केरल का त्रिशूर जिला इसके संक्रमण का केंद्र बन गया है, जहां मामले इतनी तेजी से बढ़ रहे हैं कि स्थानीय लोग घबरा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग ने आपातकालीन चेतावनी जारी की है और लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। इस साल अप्रैल के अंत तक केरल में हेपेटाइटिस के 3,227 मामले सामने आए हैं और 16 मौतें हो चुकी हैं। इसमें एर्नाकुलम, मलप्पुरम और कोझिकोड सबसे ज्यादा प्रभावित जिले रहे हैं। अब त्रिशूर संक्रमण का नया केंद्र बन गया है। पिछले साल केरल में हेपेटाइटिस-ए के 7,943 मामले दर्ज हुए थे और 81 लोगों की मौत हुई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, किसी संक्रमण से होने वाली मौतों के लिए ट्यूबरकुलोसिस के बाद हेपेटाइटिस दूसरी सबसे बड़ी वजह है। इससे हर साल लगभग 13 लाख लोगों की मौत होती है। इसका मतलब है कि हेपेटाइटिस से दुनिया में हर दिन लगभग 3500 लोगों की मौत होती है। केरल में अचानक तेजी से बढ़ रहे मामले चिंता का विषय बन गए हैं।हेपेटाइटिस लिवर में होने वाला इंफ्लेमेशन है, जो वायरस, टॉक्सिन्स या ऑटोइम्यून बीमारियों के कारण होता है। इंफ्लेमेशन हमारे शरीर का इंफेक्शन या इंजरी के प्रति रिस्पॉन्स है। यह एक गंभीर कंडीशन है, जिससे लिवर को काफी नुकसान हो सकता है।आमतौर पर हेपेटाइटिस 2 तरह का होता है- एक्यूटः यह अल्पकालिक होता है, जो लगभग 6 महीने में ठीक हो सकता है। 2. क्रॉनिकः यह लंबे समय तक बना रहता है।इसके अलावा इसे 5 और तरह से बांटा जाता है, हेपेटाइटिस ए, बी,सी,डी, और ई। हेपेटाइटिस के कारण शुरुआत में थकान, पेट के दाहिनी ओर दर्द, भूख न लगना, दस्त और हल्के बुखार जैसे लक्षण दिख सकते हैं। क्रॉनिक हेपेटाइटिस में लक्षण गंभीर हो सकते हैं।हेपेटाइटिस अलग-अलग तरीकों से फैलता है। हेपेटाइटिस ए और ई दूषित भोजन या गंदे पानी के कारण फैल सकता है। जबकि, हेपेटाइटिस बी और सी खून के संपर्क से जैसे नीडल शेयर करने से, अनसेफ सेक्स से या जन्म के दौरान मां से बच्चे में फैल सकता है। हेपेटाइटिस डी तब होता है, जब किसी को पहले से हेपेटाइटिस बी है, क्योंकि इसे बी वायरस की जरूरत होती है। गर्मी और बरसात में हेपेटाइटिस ए और ई के मामले इसलिए बढ़ जाते हैं, क्योंकि गर्मियों में साफ पीने के पानी की समस्या हो जाती है।

राज्यसभा चुनावों ने भाजपा को और मजबूत बनाया है

इस साल राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव सामान्य से अधिक चर्चा में रहे। चूंकि 37 सीटों में से 26 उम्मीदवार

निर्विरोध चुने गए तो प्रथमदृष्टया लग सकता था कि चुनाव साधारण रहे होंगे। लेकिन ये एक तरीके से भाजपा का शो बन गए। पार्टी को उसकी जरूरत से भी ज्यादा सीटें मिल गईं। इसमें बिहार, ओडिशा और हरियाणा में हुई क्रॉस वोटिंग का अहम योगदान रहा, जिसने सीधे-सीधे विपक्षी दलों को नुकसान पहुंचाया। चुनावों ने ये भी दिखाया कि भाजपा की अपने उम्मीदवारों को सशक्त बनाने और विरोधियों को कमजोर करने की दोधारी रणनीति का मुकाबला करने में विपक्ष विफल रहा। लेकिन चुनावों का असली महत्व तो नीतीश कुमार के अप्रत्याशित नामांकन और शरद पवार के फिर से राज्यसभा में जाने में था। और इसी में भाजपा की सफलता की कहानी छिपी है। नीतीश और पवार, दोनों ही भारतीय राजनीति के दिग्गज हैं। दोनों ही अपने-अपने राज्यों में कई बार मुख्यमंत्री और केंद्र सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं। यहां तक कि दोनों को कभी प्रधानमंत्री पद का दावेदार तक माना जाता था। दोनों ही आज स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। भाजपा काफी समय से 'पाटलिपुत्र' की गद्दी पर नजरें गढ़ाए थी। वह तो 2025 का बिहार चुनाव भी नीतीश के नेतृत्व में लड़ने से हिचकिचा रही थी, लेकिन बाद में उसे मानना पड़ा।चूंकि चुनाव नीतीश के नाम पर जीता गया और जदयू ने अपनी सीटें लगभग दोगुनी कर लीं तो भाजपा ने भी उन्हें ही मुख्यमंत्री बनाए रखने का निर्णय किया- भले ही वह 89 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी थी, जबकि नीतीश के पास 85 सीटें थीं। हालांकि यह सभी को पता था कि मौका मिलते ही भाजपा पटना में नेतृत्व परिवर्तन का प्रयास करेगी और मुख्यमंत्री की कुर्सी पर अपना कोई नेता बैठाएगी।? बिहार भाजपा का ड्रीम प्रोजेक्ट था, जहां वह कभी सरकार नहीं बना पाई थी। लेकिन बदलाव इतनी जल्दी होगा, इसकी उम्मीद कम थी। सबसे जटिल मसला यह था कि नीतीश को कैसे हटने के लिए राजी किया जाए? क्योंकि अपने मुख्यमंत्री पद को बरकरार रखने के लिए ही तो वे इतनी मशक्कत करते आ रहे थे। पटना की गद्दी पर बने रहने के लिए ही उन्होंने कई बार गठबंधन बदले थे। भाजपा की सफलता केवल यही नहीं है कि उसने नीतीश को बिहार से अपदस्थ कर दिया, बल्कि यह है कि ऐसा उसने स्वयं नीतीश की सहमति से किया। नीतीश ने खुद कहा कि वे अब राज्यसभा का अनुभव लेना चाहते हैं। लेकिन बेटे निशांत को उपमुख्यमंत्री पद देना ही उनके कुर्सी छोड़ने का कारण नहीं हो सकता। नीतीश पूर्व समाजवादी हैं और परिवारवाद के खिलाफ रहे राम मनोहर लोहिया व कर्पूरी ठाकुर के अनुयायी रहे हैं। वे चाहते तो बेटे को कभी भी राजनीति में ला सकते थे, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। वैसे याद रहे कि इस समय जदयू के 12 लोकसभा सांसद भाजपा के लिए बेहद अहम हैं। चूंकि भाजपा 240 सांसदों के साथ लोकसभा में अल्पमत में है, इसलिए वह अपने सहयोगियों पर निर्भर है। वह सुनिश्चित करना चाहेगी कि लोकसभा में उसकी सीटों के गणित को किसी प्रकार का खतरा नहीं हो। शरद पवार का निर्विरोध निर्वाचन भी इसी परिप्रेक्ष्य में गौरतलब है। भाजपा ने उनके खिलाफ उम्मीदवार नहीं उतारा, जैसे उसने बिहार और ओडिशा के विपक्षी दलों के सामने उतारे थे। इसी से उन राज्यों में क्रॉस वोटिंग हुई और विपक्ष हारा। पवार को महा विकास अघाड़ी ने राज्यसभा के लिए नामित किया था। इसके तीन दलों में एनसीपी (एसपी) सबसे छोटी सहयोगी है। बाकी दो दल कांग्रेस और शिवसेना (यूबीटी) हैं। इस फैसले ने सभी को चौंकाया, क्योंकि पवार तो संन्यास लेने की बात कर रहे थे। ऐसे में शिवसेना को चिंता है कि भविष्य में पवार एनडीए की सहयोगी एनसीपी के करीब जा सकते हैं, जिसका नेतृत्व दिवंगत अजित पवार कर रहे थे। सभी जानते हैं कि शरद और अजित गुट के बीच विलय की बातचीत चल रही थी। महा विकास अघाड़ी ने शायद यह सोचते हुए पवार को उम्मीदवार बनाया कि उन्हें पर्याप्त समर्थन मिल जाएगा, जबकि किसी अन्य का भाजपा विरोध कर सकती है। भाजपा के इस सद्भावना भरे रवैए से लग रहा है कि उसे उम्मीद है शरद पवार की पार्टी के आठ सांसद भी जरूरत पड़ने पर रिजर्व फोर्स की तरह लोकसभा में उसके काम आ सकते हैं। कुल मिलाकर, नीतीश का राज्यसभा जाना उन्हें और जदयू पर उनकी पकड़ को कमजोर करने वाला है। जबकि पवार का दोबारा राज्यसभा में जाना उन्हें और उनकी पार्टी को मजबूती देगा। और ये दोनों ही कदम अंततः भाजपा को और ताकतवर करेंगे।बिहार, ओडिशा और हरियाणा में हुई क्रॉस वोटिंग ने विपक्षी दलों को नुकसान पहुंचाया। भाजपा की अपने उम्मीदवारों को सशक्त बनाने और विरोधियों को कमजोर करने की दोधारी रणनीति का मुकाबला करने में विपक्ष विफल रहा। (ये लेखिका के अपने विचार हैं। नीरजा चौधरी)

लोगों की आवाजाही ना सिर्फ परिवहन बल्कि समग्र विकास को भी बढ़ाती है

इस रविवार की शाम मैं पूर्वोत्तर के ऐसे व्यक्ति से मिला, जो 28 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच होने वाले दुर्गापूजा महोत्सव के लिए मुम्बई से सिलीगुड़ी जाना चाहते थे। उन्होंने अपना पूरा दिन इस योजना में बिता दिया कि कैसे सस्ती यात्रा की जाए।

मैंने उनसे पूछा कि चंद टिकट बुक करने में इतना समय क्यों लगा? उन्होंने मुझे उन फ्लाइट की कीमतों के बारे में बताया, जिनसे पहले वे ससुराल वालों से मिलने कोलकाता और फिर अपने माता-पिता के पास सिलीगुड़ी जाना चाहते थे। 17 सितंबर तक कोलकाता की फ्लाइट टिकट करीब 4098 रुपए की है, जो धीरे-धीरे दोगुनी हो रही है और मुख्य पूजा के आसपास पांच अंकों में पहुंच जाती है। बस बुकिंग ऐप के अनुसार, दुर्गा पूजा से पहले कोलकाता से सिलीगुड़ी की बस यात्रा भी आपको 4 से 5 हजार रु. के बीच पड़ सकती है। इन बसों का नियमित किराया 1300 से 1500 रु. के बीच है। जबकि सप्ताहांत समेत पीक अवधि में 1800 से 2500 रु. में टिकट मिल पाते हैं। वो व्यक्ति योजना बना रहा था कि अपने परिवार को तो 17 सितंबर से पहले भेज देगा और खुद मुख्य पूजा के दिनों में जाएगा। वापसी में भी परिवार अलग-अलग तारीखों पर यात्रा करेगा, क्योंकि वीकेंड में 4-5 अक्टूबर को किराया बहुत अधिक है। और उन्हें 6 अक्टूबर को काम पर लौटना है। चूंकि ट्रेन की बर्थें पहले ही बुक हो चुकी हैं, इसलिए उनके जैसे कई लोग कड़ी मेहनत कर रहे हैं, ताकि उत्सव के दिनों में परिवार समेत गृहनगर पहुंच पाएं और फिर वापस देश के पश्चिमी या दक्षिणी राज्यों में काम पर लौट सकें। 574 किमी लंबे कोलकाता से सिलीगुड़ी मार्ग के लिए वोल्वो बस का किराया 8 रुपए प्रति किमी से अधिक है। टिकट की कीमत 5 हजार रुपए है। यदि कोलकाता से इंदौर मार्ग से इसकी तुलना करें तो इसी वोल्वो में 24 से 26 सितंबर के बीच किराया 3800 रुपए है, जो 1620 किमी की यात्रा के लिए 2.3 रुपए प्रति किमी पड़ता है। यहां तक कि 1940 किमी लंबाई वाले देश के सबसे लंबे मार्गों में से एक जोधपुर-बेंगलुरु रूट पर भी वोल्वो का किराया 2550 रुपए है, जो महज 1.3 रुपए प्रति किमी पड़ता है। बीते पांच दशक में भारतीय निजी बस उद्योग में जबरदस्त बढ़ोतरी देखी गई है। 1961 में निजी क्षेत्र में जहां सिर्फ 38 हजार बसें चलती थीं, वहीं 2019 तक यह संख्या बढ़कर 18.9 लाख से अधिक हो गई। 60 साल से भी कम समय में 47 गुना की बढ़ोतरी हुई है।2019 तक भारत की सड़कों पर चलने वाली 93 प्रतिशत से अधिक बसें निजी क्षेत्र में थीं, जिनमें 6.64 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर भी देखी गई। 2026 तक इनकी कीमत 1.04 लाख करोड़ रुपए होना अनुमानित है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बस किरायों में अंतर साफ दिखता है। बेंगलुरु से चेन्नई के लिए एक एसी सीटर बस का किराया महज 400 रुपए हो सकता है (दूरी 347 किमी)। उत्तर की ओर जाएं तो दिल्ली-लुधियाना मार्ग का किराया सामान्य रूप से 550 रुपए है (दूरी 307 किमी)। लेकिन यदि पूर्व में देखें तो गुवाहाटी-डिब्रूगढ़ मार्ग का किराया 650 रुपए या इससे कुछ अधिक है (दूरी 279 किमी)। ये सभी दरें अनुमानित हैं। इस असमानता का कारण क्या है? जवाब है- ग्राहक की मांग और बाजार की आपूर्ति। चूंकि पूर्वोत्तर राज्य रोजगार के पर्याप्त अवसर मुहैया नहीं करा पा रहे हैं तो उन्हें चाहिए कि भले वे स्थानीय लोगों को रियायती यात्रा ना दें, लेकिन उचित कीमत पर परिवहन तो उपलब्ध कराएं। ताकि वहां की आबादी दूसरे राज्यों में जाकर जीवनयापन कर सके।

कामयाबी के लिए खुद को न बदलें,चुनौतियों की ओर दौड़कर जाएं,बड़े मौके वहीं,संशय हो तो रुकें, सीखें,फिर बढ़ें-? मेलिंडा का मंत्र

न्यूयॉर्क। दुनिया की शीर्ष 10 अरबपति महिलाओं में शामिल और पिवोटल की प्रमुख मेलिंडा फ्रेंच ने युवाओं से कहा है,'डिग्री लेना ही असली बदलाव नहीं है। असली बदलाव तो तब शुरू होता है जब आप अगले दिन सोकर उठते हैं और खुद

से पूछते हैं- क्या मैं वाकई उस रास्ते पर हूं जहां पहुंचना चाहता हूं...? एक पॉडकास्ट में उन्होंने कहा, 'अगर आप आज अपनी राह को लेकर संशय में हैं, तो रुकिए, सीखिए और आगे बढ़िए।' पढ़िए खास अंश- आज की युवा पीढ़ी के लिए जॉब मार्केट भूलभुलैया से कम नहीं है। एक ओर एआई काम के पुराने तरीकों को निगलने को तैयार है, तो दूसरी तरफ करियर की अनिश्चितता डराती है। मुझे लगता है कि यही असल में विकास की सबसे उपजाऊ जमीन है। बदलाव सीखने का अवसर- करियर के शुरुआती दौर में जब चीजें योजना के मुताबिक नहीं होतीं, तो घबराने के बजाय रुकें। चाहे बदलाव कठिन हो या आसान, अगर हम खुद को सीखने का समय देते हैं, तो ऐसे दौर में हमारी प्रगति सबसे ज्यादा होती है। अनिश्चितता से भागें नहीं, उसे आत्मसात करें। ट्रांजिशन को समझने की प्रक्रिया अक्सर डिग्री के बाद शुरू होती है। वहीं से आप अपनी स्थिति को प्रोसेस करते हैं। यही लीडरशिप का भी केंद्र है।व्यक्तिगत मूल्यों को अहमियत दें। माइक्रोसॉफ्ट में रहते हुए शुरुआत में मुझे लगा कि मैं ऑफिस के 'गेम' जीतने के चक्कर में ऐसी इंसान बनती जा रही हूं, जिसे मैं खुद पसंद नहीं करती। तब तत्काल राह बदलने का फैसला लिया। कंपनी की संस्कृति मूल्यों से मेल नहीं खाती, तो वहां कितनी भी तरक्की मिल जाए, वह कभी भी संतुष्ट नहीं करेगी। अपनी असल पहचान के साथ नेतृत्व- करियर

के शुरुआती दो वर्षों में मैंने यह सबक सीखा कि दूसरों की तरह 'रफ-एंड-टफ' बनने की जरूरत नहीं है। अपनी सच्ची पहचान के साथ मैंने काम करना शुरू किया और सफल रही। युवाओं के लिए संदेश साफ है....आपको सफल होने के लिए अपनी शख्सियत बदलने की जरूरत नहीं है; जो आप हैं, वही आपकी सबसे बड़ी ताकत है। मुश्किल प्रोजेक्ट चुनें- कठिन समस्याओं की ओर टहलकर नहीं, बल्कि दौड़कर जाइए। वहीं आपको सबसे बड़े अवसर मिलेंगे। अगर आपके सपने आपको डराते नहीं हैं, तो वे बड़े नहीं हैं। इसलिए दोबारा सोचने की जरूरत है। करियर की शुरुआत में मुश्किल प्रोजेक्ट्स लेना ही आपको दूसरों से अलग खड़ा करेगा।' - मेलिंडा

क्या आपने कभी रविवार को समाज में उम्मीदें जगाने की कोशिश की है?

जॉर्ज अपनी पहली ग्राहक को दूर से ही देख सकते थे। उन्होंने उसकी मां के हाथों से उसका हाथ खींचा और उसे लेकर अपने गैरेज की ओर दौड़ पड़े, जहां उन्होंने बीती रात को ही यह बोर्ड लगाया था- 'आपके पास टूटी हुई चीजें हैं? तो उन्हें यहां ले आइए। इसके लिए कोई पैसा नहीं लिया जाएगा। बस चाय और बातें।' आठ साल की मिया अपने टॉय-ट्रक के साथ गैरेज में पहुंची। उसमें चौथा पहिया नहीं था। उसने कहा, 'क्या आप इसे ठीक कर सकते हैं?' फिर धीमी आवाज में कहा- 'डैड कहते हैं अभी तो हम नया नहीं खरीद सकते।' जॉर्ज ने औजारों की खोजबीन की और एक घंटे बाद ट्रक फिर से चलने लगा। अब एक बोतल का ढक्कन उसका पहिया बन गया था और उसे आकर्षक बनाने के लिए उसमें एक सिल्वर डक्ट टेप भी जोड़ दी गई थी। मिया खुशी-खुशी वहां से लौट आई, लेकिन उसकी मां वहीं रही। उन्होंने पूछा- 'क्या आप एक अच्छा रेज्यूमे भी बना सकते हैं?' तीन दिन बाद मिया शिकायत लेकर आई कि बोतल के ढक्कन वाला नया पहिया जाम हो रहा है। इस बार उसकी मां उसके साथ नहीं आई थी, क्योंकि उन्हें एक इंटरव्यू के लिए बुलावा आ गया था। महज एक हफ्ते के भीतर 79 साल के जॉर्ज के गैरेज में चहल-पहल होने लगी थी। एक विधवा महिला एक टूटी हुई घड़ी ले आई। एक किशोर फटा हुआ बैग ले आया। सेवानिवृत्त शिक्षक अलग-अलग लोगों के रेज्यूमे की प्रूफरीडिंग कर रहे थे। एक महिला बैग सिल रही थीं, जिन्होंने अतीत में यह काम किया था।अमेरिका के मिनेसोटा राज्य स्थित मेपल ग्रोव नामक इस कस्बे में कई लोगों को लगा कि जॉर्ज का दिमाग खराब हो गया है। वे एक-दूसरे से कहते कि भला कौन मुफ्त में चीजों की मरम्मत करता है? लेकिन जॉर्ज के पास इसकी एक वजह थी। उनकी दिवंगत पत्नी रुथ ने अपना जीवन जरूरतमंदों के कोट, घड़ियां आदि ठीक करने में बिताया था और वो लोगों को दिलासा भी देती थीं। वे कहती थीं कि 'चीजों को बर्बाद करना एक आदत है और दयालुता इलाज है।' फिर शिकायत आई! 'यह गैर-लाइसेंसी कारोबार है', एक इंस्पेक्टर ने चेतावनी देते हुए कहा। मेयर ने जॉर्ज को गैरेज बंद करने का आदेश दिया। अगली सुबह कस्बे के कोई 40 लोग जॉर्ज के लॉन में विरोध के बैनर और टूटी-फूटी चीजें लिए खड़े थे- 'चीजों हो नहीं, कानून की भी मरम्मत करो।' एक बैनर पर लिखा था- 'क्या दयालुता गैरकानूनी है?' जनता के दबाव में मेयर ने नरमी दिखाई और जॉर्ज को पुराने फायर हाउस में कुछ जगह दी। वालंटियर्स ने उसे पीले रंग से रंग दिया और उसे 'रूथ्स हब' नाम दिया। लोग वहां सिर्फ अपनी चीजें ठीक करवाने ही नहीं, बल्कि दूसरों से जुड़ने भी आते थे। प्लम्बर मरम्मत सिखाते थे तो किशोर सिलाई की कला सीखते थे। एक बेकर ने माइक्रोवेव की मरम्मत के ऐवज में कुछ मफिन्स दिए। शहर का कचरा 30फीसदी कम हो गया।आठ साल बाद मिया का एक पत्र आया, जो अब 16 साल की है और एक रोबोटिक्स लैब में इंटर्नशिप कर रही है। पत्र में लिखा था- 'आपने मुझे टूटी हुई चीजों में भी मूल्य देखना सिखाया। मैं सौर ऊर्जा से चलने वाला एक कृत्रिम हाथ बनाने की कोशिश कर रही हूं...' और उस पत्र में एक फुटनोट भी था- 'मेरा ट्रक अभी तक चल रहा है।

नींद न आना समस्या है

आज एक समस्या तेजी से बढ़ती दिखाई दे रही है- नींद टूटना या नींद पूरी न होना। बहुत लोग इसे सामान्य मानकर नजरअंदाज कर देते हैं और सोचते हैं यह केवल तनाव या थकान की वजह से है। लेकिन नींद से जुड़ी समस्याएं अब बड़ी स्वास्थ्य चुनौती बनती जा रही हैं। समय रहते इसके कारणों को समझकर इलाज न किया जाए, तो यह गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है। नींद न आना एक समस्या है, लेकिन नींद का बार-बार टूटना उससे भी अधिक गंभीर स्थिति हो सकती है। कई लोग मानते हैं कि उनकी नींद तनाव या चिंता के कारण टूटती है, लेकिन अकसर इसके पीछे शारीरिक कारण भी होते हैं। बड़ी संख्या में लोगों की नाक में किसी न किसी प्रकार का ब्लॉकेज पाया जाता है। यह ब्लॉकेज एलर्जी, साइनस की समस्या या नाक की हड्डी के टेढ़े होने की वजह से हो सकता है। जब नाक पूरी तरह खुली नहीं होती, तो सांस सामान्य रूप से नहीं चलती और इसका असर नींद पर पड़ता है। ऐसे में नींद बार-बार टूटती है। अकसर लोग इस समस्या को समझ नहीं पाते और बार-बार नोज ड्रॉप या स्प्रे का इस्तेमाल करते रहते हैं। इससे कुछ समय के लिए राहत मिल सकती है, लेकिन असली कारण का इलाज नहीं हो पाता। इसलिए अगर नाक लंबे समय तक बंद रहती है या बार-बार सर्दी-जुकाम होता है, तो इसकी सही जांच कराना जरूरी है। नींद टूटने की समस्या का एक कारण स्लीप एपनिया भी है। एक अध्ययन के अनुसार लगभग 32.5फीसदी लोगों में मॉडरेट से गंभीर स्लीप एपनिया पाया गया है। इस स्थिति में सोते समय व्यक्ति की सांस एक घंटे में 15 से अधिक बार रुक सकती है।

क्या है आपके पिया का टाइटल- परफेक्ट, कम्प्लीट या 'होल मैन'?

युगों से पूरी दुनिया में महिलाएं अपने पार्टनर के तौर पर एक 'परफेक्ट मैन' की तलाश में रहती हैं। फिर एक टेक्सटाइल कंपनी आई, जिसने उसके उत्पाद पहनने वाले पुरुषों को 'कम्प्लीट मैन' की श्रेणी में प्रदर्शित करना शुरू किया। लेकिन विश्व में महिलाएं अपनी पसंद को लेकर इससे आगे निकल चुकी हैं। अब वे अपने पार्टनर के रूप में एक 'होल मैन' चाहती हैं। दुनिया भर में कई महिलाओं के लिए यह एक नया ट्रेंड बन गया है कि वे अपनी दोस्तों के बीच गुप्त रूप से अपने पति के बारे में इस नए टाइटल से बात करती हैं। पहला गुण, जो उनमें नहीं होता, वो यह है कि वे इस विचार में विश्वास नहीं करते कि 'यदि आप अपनी श्रेष्ठता नहीं दिखा रहे हैं तो आप लूजर हैं।' उन्हें लगता है कि यह सोच अपने आप में बकवास है और पुरुषत्व को बढ़ावा देने वाले लोग इसे बचपन से ही थोप देते हैं। तो 'होल मैन' का मतलब क्या है? कुल मिलाकर, वह अधिकांश अच्छे मानवीय गुणों वाला सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति है। वह मजबूत है, लेकिन चोट खाने से नहीं डरता। वह अपने रोजमर्रा के जीवन में स्मार्ट है। कभी-कभी मजाकिया भी और अन्य जीवों के प्रति दयालु है। जरूरत के मुताबिक भावुक और सहायक है, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर मजबूत भी है। समूह में वह मृदु स्वभाव वाले, किंतु सबसे मजबूत हैं। वे दूसरों को रुलाकर खुद को बड़ा दिखाने के बजाय दूसरों को सहज महसूस कराते हैं। यहां 'होल मैन' की ऐसी कुछ चुनिंदा खासियतें पेश हैं, जिन्हें महिलाएं अपने पुरुषों में देखना चाहती हैं। 1. वे लेखकों, गायकों, स्टैंड-अप कॉमेडियनों के कार्यक्रमों, पॉडकास्टरों के टॉक शो में शामिल होते हैं। खासतौर पर उनमें जो महिलाओं द्वारा आयोजित किए जाते हों। वे यह नहीं मानते कि उन्हें यह कार्यक्रम पसंद नहीं आएगा, क्योंकि यह महिलाओं द्वारा बनाया गया है। वे लिफ्ट में महिलाओं को पहले जाने देते हैं। जिस जगह भी हों, महिलाओं के लिए दरवाजा खोलते हैं। 2. 'होल मैन' की कई महिला मित्र होती हैं, और वे उन्हें मजाक का पात्र नहीं बनाते। उन्हें इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनकी पत्नियों के भी कई पुरुष मित्र हैं। वे दोस्तों के सामने अपने पार्टनर को नीचा नहीं दिखाते। 3. वे किसी विशेष खेल को पसंद करते हैं और उन्हें फर्क नहीं पड़ता कि इसे पुरुष खेल रहे हैं या महिलाएं। उदाहरण के लिए, वे ऐसी डींगें नहीं मारते कि उन्हें पुरुष क्रिकेट के बारे में छोटे-छोटे आंकड़े भी पता हैं। और इस बात से भी अनजान नहीं रहते कि महिला क्रिकेट टीम की कप्तान कौन है। 4. कामकाज में वो महिला अधिकारी की असहमति से घबराते नहीं हैं। वॉशरूम में महिला बॉस के बारे में शिकायत या अपशब्दों का इस्तेमाल नहीं करते। अगर गलती हो जाती है तो वे इसे स्वीकार कर माफी मांग लेते हैं, बिना यह देखे कि कौन उन्हें देख रहा है या वह किसके सामने माफी मांग रहे हैं। 5. उन्हें इस बात का कोई पुरस्कार नहीं चाहिए कि वे बच्चों को स्कूल छोड़ते हैं, उनके स्पोर्ट्स-डे पर जाते हैं या बिना सूचना के होने वाली 'डैड्स रेस' में हिस्सा लेते हैं। वे यह सब अपने बच्चों की खुशी के लिए करते हैं। मेरे लिए ये 'होल मैन' कई जगह हैं, लेकिन उन्हें इस बात का पर्याप्त श्रेय नहीं मिलता कि वे गृहस्थी को सुचारु रुप से चला रहे हैं। काम पर शांत और जानकार बनकर, सड़कों पर सभ्य और सम्मानजनक रहकर, ट्रेनों और बसों में 'मैनस्प्रेडिंग' (पास की सीट पर अतिक्रमण) नहीं करके, और घर पर सभी का सहयोग करके। हां, अधिकतर 'होल मैन' में एक सबसे बड़ी कमी होती है, जो आमतौर पर महिलाओं को खटकती है। वे कपड़े धोना नहीं जानते। हां, वे वॉशिंग मशीन को कपड़े के हिसाब से सेट नहीं कर पाते। सूखे कपड़ों को बिना सिलवटों के स्टैंड पर नहीं टांग सकते, और सूखे कपड़ों की तह भी नहीं कर सकते। ऐसा इसलिए, क्योंकि वे चिकित्सकीय तौर पर ऐसा करने के लिए लगभग अक्षम होते हैं। खासकर, अपने साथी की पसंद के अनुरूप। फंडा यह है कि चाहे 'होल मैन' को पार्टनर के रूप में पाना गर्व की बात हो, लेकिन भारतीय संस्कृति में रची-बसी महिलाएं हमेशा से एक 'होल फैमिली' (पूर्ण परिवार) का सपना देखती हैं। इसलिए, इसको ऐसा भी कह सकते हैं- भारतीय महिलाएं केवल 'होल मैन' के बजाय 'होल फैमिली' पसंद करती हैं।'

चलते-चलते ही चलती रहे सोमवार की मीटिंग!

सोमवार हमेशा थोड़ा बोझिल लगता है। बंद बोर्डरूम में लगातार मीटिंग चलती हैं। बारिश के मौसम में तो पता भी नहीं चलता कि कब बादल छंटे, कब धूप निकली। मीटिंग के प्रेजेंटर को, गड्ढों में कार के कूदने से आने वाली छपाक की आवाज़ कभी-कभी सुनाई दे जाती है। वह भी बहुत साफ़ नहीं होती क्योंकि उसमें एसी के भरभराहट की मिलावट होती है।आपकी मीटिंग सुबह 11:30 पर थी, अब 11:45 बज चुके हैं और अंदर बैठे लोग बाहर निकलने तैयार नहीं हैं। आप अंदर झांकते हैं, तो प्रेज़ेंटर चेहरे पर माफ़ी मांगने का भाव लिए इशारे में कहते हैं, 'बस दो मिनट!' आपका तनाव बढ़ रहा है क्योंकि 12 बजे एमडी को इस हफ़्ते के सेल्स प्रोजेक्शन बताने हैं।मीटिंग से पहले आपको स्टोर हेड से स्टॉक की जानकारी लेनी है और प्रोडक्शन डिपार्टमेंट का प्लान भी जानना है। ऐसे में आप

क्या कर सकते हैं? क्यों न मीटिंग को बोर्डरूम से बाहर ले जाएं। इसे कहते हैं, वॉकिंग मीटिंग यानी चलते-चलते, हो जाए मीटिंग।व्यस्त लोग और विभागों के प्रमुख खास स्टाइल में कहते हैं, 'मेरे साथ चलो' और बिल्डिंग के एक विंग से दूसरे विंग में जाते हुए, दो मिनट में मीटिंग पूरी हो जाती है। ऐसा ही कुछ टीवी शो, 'द वेस्ट विंग' में देखने मिलता है। यह पॉलिटिकल ड्रामा सीरीज़ है, जो अमेरिकी राष्ट्रपति के प्रशासनिक विभाग और कर्मचारियों की रोजमर्रा की चुनौतियां दिखाती है। इसे देखकर आपको भी चलते-चलते मीटिंग की आदत हो सकती है।शो में राष्ट्रपति के साथ काम कर रहे कई लोग अक्सर डायलॉग बोलते हैं 'वॉक विद मी' और फिर व्हाइट हाउस के गलियारे में मीटिंग शुरू हो जाती है, जहां राष्ट्रपति को बताने के लिए कर्मचारी आंकड़े साझा करते हैं। सपोर्ट स्टाफ़ के साथ ये मीटिंग जानबूझकर बाहर की जाती हैं। इसमें एक स्टाइल है। यह आकर्षक है क्योंकि इसमें सहकर्मी के साथ एक पॉइंट से दूसरे पॉइंट तक चला जा सकता है। कल्पना कीजिए, सूट-बूट में दो सहकर्मी, जटिल संवाद कर रहे हैं और फिर बीच गलियारे में रुककर रणनीति तैयार करते हैं। फिर उनमें से एक एमडी के केबिन में चला जाता है और दूसरा ऑफिस में जाकर गलियारे में हुई चर्चा को दस्तावेज में दर्ज कर लेता है। स्वर्गीय स्टीव जॉब्स वॉकिंग मीटिंग की काफ़ी वकालत करते थे। उनके साथ काम करने वाले बताते हैं कि 30फीसदी मीटिंग चलते हुए होती थीं।स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की 2014 की रिसर्च बताती है कि चलने से रचनात्मकता बढ़ती है, चलते हुए भी और बाद में भी। मैं सिर्फ़ ऑफ़िस में चलने से होने वाले फ़ायदों की बाद नहीं कर रहा।यह कारगर है।मैंने ऐसी कई वॉकिंग मीटिंग देखी हैं, जहां दोनों पक्ष बड़ी आसानी से किसी टॉपिक पर बात कर पाए।

सऊदी से लेकर ईरान तक, खाड़ी देशों में ही क्यों है विशाल तेल भंडार, कहीं और क्यों नहीं बन पाया 'खजाना', जानें

रियाद। ईरान में अमेरिका और इजरायल के हमले के बाद दुनिया के बड़े हिस्से ने उर्जा संकट का अनुभव किया है। इसकी वजह ईरान का हमलों के जवाब में होर्मुज स्ट्रेट को बंद

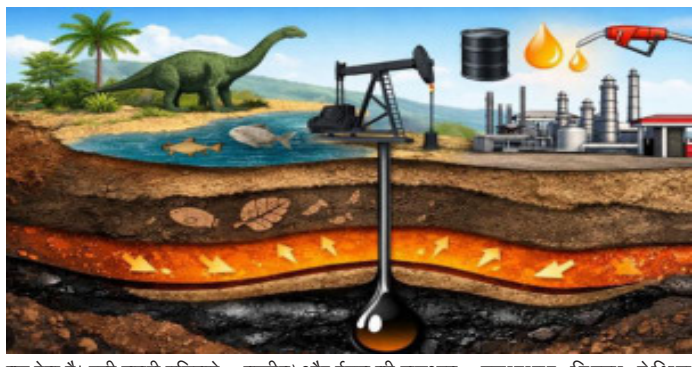

कर देना है। इसी समुद्री गलियारे के जरिए पश्चिम एशिया यानी अरब के मुल्कों से तेल और गैस बाकी दुनिया में पहुंचता है। ऐसे में भारत समेत दुनिया के कई देशों में तेल और गैस की कमी होने लगी है। इस सबके बीच यह सवाल उठता है कि आखिर पश्चिम एशिया की जमीन में ही इतने बड़े तेल भंडार क्यों हैं। साथ ही इस क्षेत्र के तेल की बहुत ज्यादा मांग और इस पर दुनिया की बहुत ज्यादा निर्भरता क्यों है। तेल और गैस आज किसी भी शहर की जीवनरेखा हैं। कुछ दशक पहले तक कोई शहर बिना गैस और तेल के आसानी से गुजारा कर सकता था लेकिन आज एक छोटा गांव भी पेट्रोल-डीजल, एलपीजी के बिना नहीं चल पाएगा। यही वजह है कि दुनिया कि नजर ईरान युद्ध और होर्मुज स्ट्रेट पर लगी हैं। दुनिया का एनर्जी सप्लाइर बनने की अरब जगत (सऊदी अरब, यूएई, कतर, बहरीन) और ईरान की शुरुआत 100 साल से ज्यादा पुरानी है। इस क्षेत्र में तेल की पहली खोज 1908 में ईरान के मस्जिद-ए-सुलेमान में हुई थी। इस पहली खोज ने पूरे क्षेत्र में बड़े पैमाने पर खोज-अभियानों को बढ़ावा दिया। इसके बाद इराक और पूरे अरब जगत में तेल खोजने की होड़ शुरू हुई और नतीजे में कई बड़ी खोजें क्षेत्र में हुईं। क्षेत्र में तेल की कुछ शुरुआती प्रमुख खोजें इस तरह से हैं। ईरान (1908): मस्जिद-ए-सुलेमान इराक (1927): बाबा गुरगुर (किरकुक) बहरीन (1932): जेबेल दुखान, सऊदी अरब (1938): दम्माम, कुवैत (1938): बुरगान, कतर (1939-1940): दुखान, संयुक्त अरब अमीरात (1958): मुरबान बाबअरब को रेत के टीलों और सूखे का पर्याय माना जाता है लेकिन इससे बहुत पहले यह 'समुद्री क्रैडल' था। करीब 10 करोड़ साल पहले इस क्षेत्र का ज्यादातर हिस्सा टेथिस महासागर के गर्म उथले विस्तार के नीचे डूबा हुआ था। यह पूरा इलाका प्लवक, शैवाल और सूक्ष्म जीवों से भरा हुआ था। इन्होंने ही एक गाढ़ा जैविक मिश्रण तैयार किया, जो आज के वक्त में तेल के रूप में वैश्विक अर्थव्यवस्था की बुनियाद बना हुआ है। करोड़ों वर्ष पहले क्षेत्र के जीव मरकर समुद्र तल में समा गए और विशाल ऑक्सीजन-रहित परतों के रूप में जमा हो गए। समय के साथ तलछट ने इस जैविक पदार्थ को पूरी तरह ढक लिया और भारी दबाव के कारण इसे कसकर दबा दिया। इसके बाद का काम तेज गर्मी ने किया। गर्मी ने इस सड़ते हुए पदार्थ को हाइड्रोकार्बन में बदला। यानी आज का रेगिस्तान कभी एक जैव-रासायनिक इंजन था, जिसे सूरज ने ईंधन में बदला। तेल बनने के लिए सिर्फ उत्पत्ति ही नहीं बल्कि उसे सुरक्षित रहने की भी जरूरत होती है। पश्चिम एशिया को इसमें खास फायदा मिला। क्षेत्र की जमीन के नीचे की बनावट पेट्रोलियम सिस्टम की पूर्णता का बेहतरीन उदाहरण है। सबसे पहले यहां भरपूर सोर्स रॉक है, जहां हाइड्रोकार्बन बनते हैं। फिर छेदों वाली रिजर्वॉयर रॉक है, जो बलुआ या चूना पत्थर होती है और इसमें तेल जमा होता है। आखिर में कैप रॉक इस सिस्टम को सील करती है, जिससेतेल बाहर नहीं रिसता है। जमीन के नीचे यह तिकड़ी बहुत कम देखने को मिलता है। पश्चिम एशिया में इनका आदर्श रूप से एक साथ मिलना एक दुर्लभ उदाहरण है। इस बनावट की वजह से हाइड्रोकार्बन ना केवल बन पाए बल्कि भारी मात्रा में जमीन के नीचे फंसे रहे। दुनिया के दूसरे हिस्सों में टेक्टोनिक हलचलों यानी भूकंप, पहाड़ों का बनना या महाद्वीपों का खिसकने ने तेल के भंडारों को बिखेर दिया। इसके उलट पश्चिम में भूवैज्ञानिक शांति रही। इससे जमीन के नीचे तेल जमा हुआ और सुरक्षित भी रहा। इस पूरे प्रोसेस में इस क्षेत्र की भूवैज्ञानिक शांति एक ऐसा मुख्य किरदार है, जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए पैसिफिक रिंग ऑफ फायर की अस्थिर टेक्टोनिक हलचलों के विपरीत अरेबियन प्लेट लाखों सालों से स्थिर रही है। इस स्थिरता ने यह पक्का किया कि बनकर तैयार हो रहे तेल के भंडार ना तो टूटे और ना ही खराब हुए। शांत और स्थिर स्थितियों की वजह से तेल के कुएं छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखरने और मुश्किल से मिलने के बजाय बहुत बड़े और एक-दूसरे से जुड़े हुए बने। इसका नतीजा यह हुआ कि यहां सिर्फ तेल की बहुतायत ही नहीं मिली बल्कि यह एक ही जगह पर भी मिला है। पश्चिम एशिया में तेल का एक ही जगह पर भारी मात्रा में जमा होना उसे खास बना देता है। तेल के बनने और जमा होने के बाद इसके निकालने के प्रोसेस में भी पश्चिम एशिया को दूसरे क्षेत्रों पर फायदा मिलता है। इस इलाके के भंडार अक्सर बड़े, उथले और जमीन पर मौजूद तेल क्षेत्रों में होते हैं। इससे तेल यहां पर निकालना बाकी दुनिया के मानकों के हिसाब से सस्ता है। यहां गहरे पानी वाले तेल क्षेत्रों या आर्कटिक इलाकों के मुकाबले बहुत कम खर्च आता है। पश्चिम एशिया में ना तो मुश्किल ऑफशोर रिग्स की जरूरत होती है और न ही ज्यादा टेक्नोलॉजी वाली ड्रिलिंग की। इसका सीधा मतलब कम लागत है। लागत में यह फायदा बाजार में ताकत बनकर उभरता है। पश्चिम एशिया के तेल उत्पादक तेल की कीमतें गिरने पर भी उत्पादन जारी रख सकते हैं। इससे वे अपने प्रतिस्पर्धियों को पीछे छोड़ देते हैं।

1972 के बाद पहली बार चांद के करीब पहुंचेंगे इंसान,10 दिन में चंद्रमा का चक्कर काटकर लौटेंगे 4 अंतरिक्ष यात्री नासा का आर्टेमिस-II मिशन लॉन्च

उन्होंने मिशन कंट्रोल को 'ग्रेट फ्लाइंग विद यू ह्यूस्टन' कहकर धन्यवाद दिया।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...**

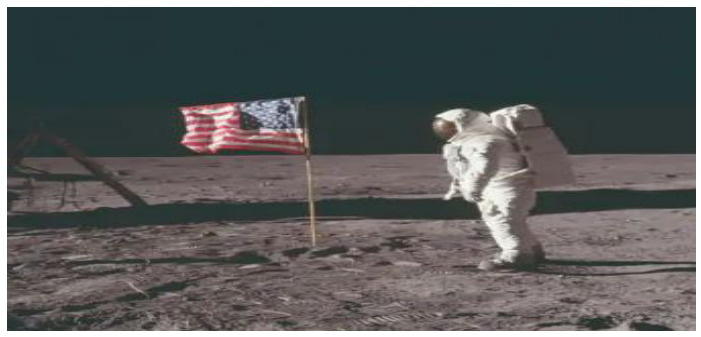

दूरी बढ़ाईः टेस्ट खत्म होने के बाद ओरियन ने अपने इंजन दागे ताकि वह रॉकेट के उस हिस्से से दूर हो सके जो वापस धरती की ओर गिर रहा था। मिशन के अगले पड़ावः अब आराम की बारी-एस्ट्रोनॉट्स का ब्रेकः लॉन्चिंग के बाद अंतरिक्ष यात्रियों ने अपने ऑरेंज सूट उतारकर आरामदायक कपड़े पहन लिए हैं। अब वे कुछ घंटों की नींद (झपकी) लेंगे। अगला मिशनः कुछ घंटों बाद उन्हें फिर जागना होगा। 'ओरियन कैप्सूल' का इंजन फिर से स्टार्ट किया जाएगा, ताकि उसकी कक्षा को और ऊपर ले जाया जा सके। मेडिकल चेकअपः हर दिन ग्राउंड कंट्रोलर्स के साथ एक मेडिकल कॉन्फ्रेंस होगी, जिसमें एस्ट्रोनॉट्स अपनी सेहत और किसी भी शारीरिक परेशानी की जानकारी साझा करेंगे। मकसदः 'लाइफ सपोर्ट सिस्टम' की जांच चाहता है नासा-मिशन का मकसद स्पेसक्राफ्ट के 'लाइफ सपोर्ट सिस्टम' की जांच करना है। नासा देखना चाहता है कि अंतरिक्ष में इंसानों के रहने के लिए यह कितना सुरक्षित है। यान अभी चंद्रमा की सतह पर नहीं उतरेगा, लेकिन भविष्य में चंद्रमा पर इंसानों के बसने का रास्ता आसान बनाएगा।मिशन में नासा के तीन और कनाडाई स्पेस एजेंसी का एक अंतरिक्ष यात्री शामिल है। 1. रीड वाइजमैनः यूएस नेवी के टेस्ट पायलट रह चुके वाइजमैन (50) मिशन कमांडर हैं। 2014 में स्पेस स्टेशन पर 6 महीने बिताने वाले वाइजमैन जमीन पर ऊंचाई से डरते हैं। 2020 में अपनी पत्नी को खोने के बाद वाइजमैन अपनी दो बेटियों की अकेले परवरिश कर रहे हैं।2. क्रिस्टीना कोचः इंजीनियर और फिजिसिस्ट क्रिस्टीना कोच (47) मिशन स्पेशलिस्ट हैं। वह अंतरिक्ष में सबसे लंबे समय तक रहने वाली महिला (328 दिन) का रिकॉर्ड बना चुकी हैं। बचपन में अपोलो-8 की खींची गई 'अर्थराइज' फोटो देखकर उन्होंने अंतरिक्ष यात्री बनने की ठानी थी। 3. जेरेमी हैनसनः कनाडा के पूर्व फाइटर पायलट जेरेमी हैनसन (50) मिशन स्पेशलिस्ट हैं। अगर सब-कुछ प्लान के मुताबिक रहा तो हैनसन इस मिशन के जरिए चांद तक पहुंचने वाले पहले गैर-अमेरिकी बनेंगे। हैनसन अपने साथ कनाडा का मशहूर मैपल सिरप और कुकीज ले गए हैं। 4. विक्टर ग्लोवरः मिशन के लिए पायलट चुने गए ग्लोवर (49) चांद के करीब पहुंचने वाले पहले अश्वेत व्यक्ति होंगे। ग्लोवर अपने साथ बाइबिल, अपनी शादी की अंगूठियां ले गए हैं। वे कहते हैं कि ब्रह्मांड में अपनी जगह को तलाशना और सीखना ही इंसान होने का असली मतलब है।आर्टेमिस-II के बाद नासा 'आर्टेमिस-छ्ठ' मिशन पर काम करेगा। उसमें डॉकिंग सिस्टम की टेस्टिंग होगी। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो साल 2028 में आर्टेमिस-4 के जरिए इंसान एक बार फिर चांद पर कदम रखेगा। इससे पहले 2022 में मानवरहित आर्टेमिस-1 भेजा गया था।

होर्मुज स्ट्रेट की टेंशन खत्म करेंगे खाड़ी देश सऊदी, यूएई और जॉर्डन, बनाएंगे नई पाइपलाइन! अडानी की बल्ले-बल्ले

तेल अवीव। होर्मुज स्ट्रेट को बाईपास करते हुए अरब देश इजरायल के हाइफा शहर से कच्चा

तेल निर्यात करने पर विचार कर रहे हैं। इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने पिछले महीने इसका प्रस्ताव अरब देशों को दिया था। फाइनेंशियल टाइम्स ने गुरुवार को अपनी रिपोर्ट में बताया है कि खाड़ी देश अपने तेल पाइपलाइन नेटवर्क को होर्मुज जलडमरूमध्य को बाइपास करने पर विचार कर रहे हैं। इसका मकसद तेल निर्यात के लिए फारस की खाड़ी के इस अहम जलमार्ग पर अपनी निर्भरता को खत्म करना है। आपको बता दें कि जिस हाइफा पोर्ट की बात हो रही है उसका मुख्य संचालक भारतीय कंपनी अडानी है। उन्होंने इसे एक कंसोर्टियम (संघ) के माध्यम से खरीदा है। इस कंसोर्टियम में अडानी समूह की 70फीसदी हिस्सेदारी है। बाकी की 30फीसदी हिस्सेदारी इजरायल की स्थानीय कंपनी गैडोट के पास है। अडानी-गैडोट समूह के पास इस बंदरगाह को वर्ष 2054 तक संचालित करने का लाइसेंस है। यह इजरायल का दूसरा सबसे बड़ा बंदरगाह है और देश के लगभग आधे कंटेनर कार्गो को संभालता है। यह क्रूज जहाजों के लिए भी इजरायल का मुख्य टर्मिनल है। एफटी की रिपोर्ट में कहा गया है कि जिन मुख्य विकल्पों पर विचार किया जा रहा है उनमें एक ऐसा व्यापार मार्ग भी शामिल है जो हाइफा बंदरगाह के रास्ते अरब प्रायद्वीप को भूमध्य सागर से जोड़ेगा। रिपोर्ट के अनुसार युद्ध के दौरान तेल निर्यात का लगातार प्रवाह बनाए रखने वाला खाड़ी देशों में एकमात्र देश सऊदी अरब रहा है। इसका मुख्य श्रेय 'ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन' को जाता है जो सऊदी अरब के तेल क्षेत्रों को लाल सागर स्थित यानबू बंदरगाह से जोड़ती है और होर्मुज जलडमरूमध्य को बाईपास करती है।एक प्रमुख खाड़ी देश के ऊर्जा अधिकारी ने एफटी की रिपोर्ट में कहा है कि 'पीछे मुड़कर देखने पर ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन एक जबरदस्त मास्टरस्ट्रोक लगती है।' रिपोर्ट में अधिकारी ने कहा है कि 'जिन नई परियोजनाओं पर विचार किया जा रहा है उनमें न सिर्फ एक नई पाइपलाइन या मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार शामिल है बल्कि पाइपलाइनों, ट्रेनों और सड़कों का एक नया नेटवर्क तैयार करना भी शामिल है जिससे हम स्ट्रेट ऑफ होर्मुज पर अपनी निर्भरता खत्म कर सकेंगे।' लेबनान की कंस्ट्रक्शन कंपनी 'कैट ग्रुप' के चीफ एग्ज़ीक्यूटिव क्रिस्टोफर बुश, जो सऊदी ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन के मुख्य निर्माताओं में से एक थे, उन्होंने एफटी को इस बात की पुष्टि की कि कंपनी से 'विभिन्न पाइपलाइनों के बारे में पूछताछ की गई है।' सबसे दिलचस्प बात ये है कि एफटी रिपोर्ट में जिस मुख्य प्रोजेक्ट का जिक्र किया गया है वह है यूएस के नेतृत्व वाला आईएमईसी। जो सड़कों, रेल और पाइपलाइनों के नेटवर्क के जरिए भारत को भूमध्य सागर से जोड़ेगा। इस योजना के लिए मुख्य चुनौती सऊदी अरब की इस बात पर सहमति हासिल करना होगी कि हाइफा बंदरगाह को भी इस मार्ग का हिस्सा बनाया जाए। इजरायली कंपनी NewMed Energy के सीईओ योसी अबू ने रिपोर्ट में कहा है कि भूमध्य सागर तक पाइपलाइनें इसलिए जरूरी हैं ताकि लोग 'अपने दोस्तों के साथ मिलकर अपनी किस्मत खुद तय कर सकें।'अबू ने एफटी को बताया है 'आपको पूरे इलाके में तेल पाइपलाइनें और रेल कनेक्टिविटी चाहिए। जमीन पर, ताकि कोई और रुकावटें डालकर हमारा गला न घोंट सके।' प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सोमवार को कहा है कि होर्मुज जलडमरूमध्य संकट का एकमात्र हल यह है कि पाइपलाइनों का रास्ता बदलकर उन्हें भूमध्य सागर तक पहुंचाया जाए ताकि वहां तक पहुँचना आसान हो जाए।नेतन्याहू ने अमेरिका के न्यूज़ मैक्स को दिए इंटरव्यू में समझाया कि 'लंबे समय के समाधानों में ऊर्जा पाइपलाइनों का रास्ता पश्चिम की ओर मोड़ना शामिल है, सऊदी अरब से होते हुए लाल सागर और भूमध्य सागर तक, ताकि ईरान के भौगोलिक रुकावट वाले पॉइंट को बाईपास किया जा सके।' नेतन्याहू ने कहा कि हालांकि कोई सैन्य समाधान शायद कुछ समय के लिए स्थिरता दे सकता है लेकिन एक ऐसा समझौता जो इस जलडमरूमध्य के रणनीतिक महत्व को ही खत्म कर दे वह लंबे समय के लिए सबसे अच्छा रास्ता हो सकता है।'

ईरान जंग में पाकिस्तान की मध्यस्थता मास्टरस्ट्रोक? क्या पीछे छूट रहा भारत? एक्सपर्ट से समझें

इस्लामाबाद। पाकिस्तान बार बार मध्यस्थता की पेशकश कर रहा है और ईरान उसकी

कोशिशों को खारिज कर रहा है। दूसरी तरफ दिल्ली में चर्चा इस बात की है कि पाकिस्तान जिस तरह से मध्यस्थ की भूमिका में आना चाहता है तो क्या भारत का किनारे से खड़ा देखना एक बड़ी गलती है? पाकिस्तान हर हाल में खुद को मध्यस्थ के तौर पर देखना चाहता है। शहबाज सरकार की अंदरूनी राजनीति के लिए ये फायदेमंद है। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले हफ्ते इस्लामाबाद ने तेहरान को 15 सूत्रीय शांति योजना पहुंचाई थी और बातचीत की मेजबानी की पेशकश की थी जिसे ईरान ने सिरे से ठुकरा दिया। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ईरान को लेकर पांच सूत्रीय शांति योजना के साथ चीन का समर्थन मांगने बीजिंग पहुंचे हैं। इस दौरान खुद पाकिस्तान, चीन की मध्यस्थता में तालिबान के साथ शांति वार्ता में शामिल होगा। भारत के लिए स्थिति थोड़ी असहज करने वाली हो सकती है क्योंकि पाकिस्तान एक प्रतिद्वंदी है और भारत को मध्यस्थता की कोई कोशिश करनी चाहिए या नहीं इसपर नई दिल्ली की डिप्लोमेटिक सर्किल में काफी बहस हो रही है। कांग्रेस ने सरकार पर निशाना साधा है तो दूसरे लोगों का मानना है कि इस तरह की परिस्थिति में 'दिखने' वाली भूमिका को अपने आप में ज्यादा अहमियत नहीं देते। वे आगाह करते हैं कि बिना किसी मजबूत आधार या न्योते के मध्यस्थता करने की कोशिश उलटी भी पड़ सकती है। उनका मानना है कि भारत के हित चुपचाप कूटनीति करने और रणनीतिक दूरी बनाए रखने में ज्यादा सुरक्षित रहते हैं। भारत सरकार की सोच भी कुछ ऐसी ही लग रही है। पिछले हफ्ते हुई एक सर्वदलीय बैठक में भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कथित तौर पर पाकिस्तान की भूमिका को 'दलाली' कहकर खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि 'यह असल स्थिति को गलत तरीके से दिखाता है।' इसीलिए अगर भारत असल में कभी कि पाकिस्तान 1981 से ही ऐसी भूमिका निभाता आ रहा है जिसमें अमेरिका और तालिबान के बीच हुई बातचीत भी शामिल है। इस दौरान उन्होंने ये भी कहा कि 'हम अलग-अलग देशों के पास जाकर यह नहीं पूछते फिरते कि हम किस तरह की दलाली कर सकते हैं।' शिव नाडर यूनिवर्सिटी के हैपीमोन जैकब ने तर्क दिया है कि इस मुद्दे की जड़ में रणनीति से ज्यादा मनोविज्ञान काम कर रहा है। उन्होंने अपने एक लेख में लिखा है कि 'भारत में इस पर जो प्रतिक्रिया देखने को मिली है वह एक तरह की 'प्रतिस्पर्धी बेचैनी' वाली है। अगर पाकिस्तान ऐसा कर सकता है तो हम क्यों नहीं!' उन्होंने आगे कहा कि 'भारत में यह कुछ छूट जाने का डर है। सबसे बुरी बात यह है कि यह एक छोटे पड़ोसी से होने वाली जलन है, जिसे वह अटेंशन मिल रही है जो हमारे स्ट्रेटेजिक समुदाय में कुछ लोगों का मानना है कि भारत को मिलनी चाहिए। लेकिन न तो कुछ छूट जाने का डर और न ही जलन है, बल्कि यह अच्छी विदेश नीति का ठोस आधार है।' अटलांटिक काउंसिल में दक्षिण एशिया के सीनियर फेलो माइकल कुगेलमैन भी 'भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता के जीरो-सम अप्रोच' का विरोध करते हैं। उनका तर्क है कि भारत असल में कभी भी मध्यस्थता की दौड़ में था ही नहीं और बिना किसी औपचारिक न्योते के उसके इसमें दखल देने की संभावना भी कम है। उनका सुझाव है कि 'पाकिस्तान की यह कूटनीतिक सक्रियता शायद ज्यादा समय तक न चले और सिर्फ एक बिचौलिए की भूमिका तक ही सीमित रहे। क्योंकि आपसी अविश्वास के चलते अमेरिका और ईरान के बीच सीधी बातचीत की संभावना अभी जल्द नहीं दिखती।' उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की मध्यस्थता की दौड़ में था ही नहीं तो कई लोगों के अनुसार ज्यादा अहम सवाल यह है कि उसे इसके बजाय कौन सी भूमिका निभानी चाहिए। पाकिस्तान में भारत के पूर्व उच्चायुक्त अजय बिसारिया के लिए इसका जवाब भारत की ताकतों और उसकी सीमाओं, दोनों को पहचानने में छिपा है। बीबीसी की रिपोर्ट में उनका कहना है कि भले ही भारत में शांति स्थापित नहीं है लेकिन वह पूरी तरह से चुपचाप बैठा भी नहीं रह सकता। भारत की पूर्व विदेश सचिव निरुपमा राव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि 'इस युद्ध ने भारत के हितों को लगभग हर व्यावहारिक मायने में नुकसान पहुंचाया है... इससे भी गहरा सवाल यह है कि क्या भारत इस बात को पूरी स्पष्टता के साथ कहने को तैयार है?' उन्होंने आगे सवाल उठाया है कि 'संयम की अपनी जगह है। संतुलन बनाना जरूरी है। लेकिन जब संप्रभुता, बल के इस्तेमाल की सीमाओं और नागरिकों की सुरक्षा जैसे बुनियादी सवाल उठते हैं तो भारत चुप नहीं रह सकता।' लेकिन जैकब का कहना है कि हाल के वर्षों में भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत और आधिकारिक बयानों में उसे विश्व मंच पर एक अहम आवाज़ के तौर पर पेश किए जाने की वजह से वैश्विक स्तर पर उसकी भूमिका को लेकर उम्मीदें काफी बढ़ गई हैं। चूंकि मोदी सरकार ने भारत के उभार को बड़े फलक पर पेश किया है, उसे 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) की एक प्रमुख आवाज और भू-राजनीतिक दरारों के बीच एक सेतु के तौर पर दिखाया है, इसलिए हर वैश्विक

संकट में अपनी मौजूदगी दर्ज कराने की ललक भी बढ़ गई है। लेकिन जैकब का कहना है कि इस महत्वाकांक्षा पर थोड़ा अंकुश लगाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि 'भारत ने जलवायु और ऊर्जा के क्षेत्र में अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया है। उसे हर काम करने की न तो जरूरत है और न ही वह ऐसा कर सकता है। असली चुनौती तो अपनी क्षमताओं और लोगों की उम्मीदों के बीच के फासले को संभालना है और यह समझने की समझदारी रखना है कि क्या करना चाहिए और ठीक उतनी ही अहम बात यह है कि क्या नहीं करना चाहिए।'

भारत ने 38424 करोड़ के बेचे स्वदेशी हथियार, राजनाथ ने दिया ब्यौरा

नयी दिल्ली। भारत के रक्षा निर्यात में वित्त वर्ष 2025-26 में बड़ी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वित्त वर्ष 2025-26 में डिफेंस एक्सपोर्ट का आंकड़ा रिकॉर्ड 38,424 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। ये पिछले वित्त वर्ष के 23,622 करोड़ रुपए के मुकाबले 62.66 फीसदी ज्यादा है। सरकार के अनुसार, इस उपलब्धि में रक्षा सार्वजनिक उपक्रम (डीपीएसयू) और निजी क्षेत्र, दोनों का अहम योगदान रहा। कुल निर्यात में डीपीएसयू का हिस्सा 54.84 फीसदी और निजी कंपनियों का 45.16 प्रतिशत रहा। इस कामयाबी पर राजनाथ सिंह ने कहा कि देश सफलता की शानदार कहानी लिखा रहा है। रक्षा निर्यात में बंपर इजाफा-रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को एक्स पर पोस्ट में कहा कि रक्षा निर्यात में यह 'बड़ी छलांग' भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताओं पर बढ़ते वैश्विक भरोसे को दर्शाती है। देश रक्षा निर्यात में सफलता की शानदार कहानी लिख रहा है। उन्होंने आगे कहा

कि वित्त वर्ष 2025-26 में भारत का रक्षा निर्यात रिकॉर्ड 38,424 करोड़ रुपये के नए उच्च स्तर पर पहुंच गया है। यह पिछले वित्त वर्ष 2024-25 की तुलना में 62.66 फीसदी की मजबूत वृद्धि है।रक्षा मंत्री ने कहा कि 14,802 करोड़ रुपये की इस बड़ी बढ़ोतरी से भारत की स्वदेशी क्षमताओं और उन्नत विनिर्माण क्षमता पर वैश्विक विश्वास झलकता है। उन्होंने बताया कि इस उपलब्धि में रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू) का योगदान 54.84 फीसदी है। वहीं निजी उद्योग का योगदान 45.16 फीसदी रहा, जो सहयोगात्मक और आत्मनिर्भर रक्षा परिवेश की ताकत को दर्शाता है। भारत का रक्षा निर्यात 2024-25 में 23,622 करोड़ रुपये और 2023-24 में 21,083 करोड़ रुपये रहा था। अहम फैक्ट्स- रक्षा मंत्रालय की ओर से कहा गया कि यह उपलब्धि भारत को दुनिया के प्रमुख रक्षा निर्यातक देशों में शामिल करने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुरूप है। डीपीएसयू के निर्यात में पिछले साल के मुकाबले 151 फीसदी की तेज वृद्धि दर्ज की गई. निजी क्षेत्र ने भी 14 फीसदी की बढ़त हासिल कर अपनी मजबूत मौजूदगी दिखाई। मूल्य के हिसाब से देखें तो प्राइवेट सेक्टर ने 17,353 करोड़ रुपये का निर्यात किया। डीपीएसयू का योगदान 21,071 करोड़ रुपए रहा। पिछले वित्त वर्ष में ये आंकड़े क्रमशः 15,233 करोड़ रुपये और 8,389 करोड़ रुपए थे। भारत अब केवल रक्षा प्रणालियों और उप-प्रणालियों का भरोसेमंद वैश्विक साझेदार ही नहीं है वित्त वर्ष 2026 तक भारत 80 से ज्यादा देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है। साथ ही, निर्यातकों की संख्या भी बढ़कर 128 से 145 हो गई है, जो 13.3 फीसदी की वृद्धि है।

अजय देवगन हुए 57 के,जावेद जाफरी के खाने में भांग मिलाई,जीता नेशनल अवॉर्ड, 16 फिल्मों ने रु100 करोड़ से अधिक कमाए

मुंबई। साल था 1991 का और फिल्म 'फूल और कांटे' थी, जब एक लड़का बड़े पर्दे पर आया।

दो चलती बाइकों पर खड़े होकर की गई उसकी एंट्री इतनी आइकॉनिक थी कि यह फिल्म देखने वाले लोग आज भी इसे भूल नहीं पाए हैं। शुरुआत में उसे एक्शन हीरो माना गयाष्ठ लेकिन उसने खुद को सीमित नहीं रखा। 'जख्म' और 'कंपनी' जैसी फिल्मों में उसने शानदार एक्टिंग की, जिसे लोगों के साथ क्रिटिक्स ने भी पसंद किया। फिर 'गोलमाल' और 'ऑल द बेस्ट' जैसी फिल्मों में लोगों को हंसायाष्ठ और 'सिंघम' बनकर मास हीरो भी बना। उसने 35 साल के करियर में 16 से ज्यादा 100 करोड़ की कमाई वाली फिल्में दीं और कई नेशनल अवॉर्ड भी जीते। हम बात कर रहे हैं अजय देवगन की। आज वही अजय देवगन 57 साल के हो चुके हैं। उनके जन्मदिन पर जानिए उनकी जिंदगी के दिलचस्प किस्से- किस्सा 1: पिता की बंदूक चुपके से निकालकर ले गए- अजय देवगन का जन्म 2 अप्रैल 1969 को मुंबई में हुआ था। उनका असली नाम विशाल वीरेंद्र देवगन है। वे फिल्मी परिवार से आते हैं। उनके पिता वीरू देवगन हिंदी फिल्मों के मशहूर स्टंट और एक्शन डायरेक्टर थे, जबकि मां वीना फिल्म प्रोड्यूसर थीं। इसी वजह से अजय का बचपन से फिल्मों से कनेक्शन रहा। अजय बचपन में ही अपने पिता के साथ फिल्म एडिटिंग में हाथ बंटाने लगे थे। 8-9 साल की उम्र में उन्हें कैमरा और शूटिंग की समझ आने लगी थी। 12-13 साल की उम्र तक उन्होंने छोटे-छोटे फिल्म प्रोजेक्ट बनाना शुरू कर दिया था। उनके पिता ने उन्हें कैमरा दिया था, जिससे वे खुद शूटिंग करते और सेट तैयार करते थे। 15 साल की उम्र तक वे स्पेशल इफेक्ट्स भी करने लगे थे। कॉलेज के दिनों में भी वे पढ़ाई के साथ फिल्ममेकिंग सीखते रहे। इसी दौरान डायरेक्टर शेखर कपूर ने उनके काम को देखकर उन्हें असिस्टेंट बनने का मौका दिया।अजय देवगन अपने कॉलेज के दिनों में काफी मस्तीखोर थे। मिड डे को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कॉलेज के दिनों में वो दो बार जेल भी जा चुके हैं। एक बार तो वे अपने पिता की बंदूक चुपके से निकालकर बाहर ले गए थे। किस्सा 2: फिल्मों में आने के लिए बदला नाम-अजय देवगन का असली नाम विशाल देवगन है, लेकिन फिल्मों में आने से पहले उन्होंने नाम बदल लिया। इसके पीछे की वजह यह थी कि जब अजय फिल्मों में डेब्यू करने वाले थे, उस समय कई नए एक्टर्स विशाल नाम से लॉन्च हो रहे थे। उनमें से एक मनोज कुमार का बेटे (विशाल गोस्वामी) भी थे। इससे इंडस्ट्री में कन्फ्यूजन पैदा हो रहा था। इसी वजह से उनका नाम विशाल से अजय कर दिया गया। अजय का फिल्मी करियर भी दिलचस्प तरीके से शुरू हुआ। उनके पिता चाहते थे कि वे एक्टर बनें, लेकिन अजय की रुचि फिल्ममेकिंग में ज्यादा थी। जब उन्हें फिल्म फूल और कांटे ऑफर हुई, तो उन्होंने पहले मना कर दिया था, लेकिन पिता और फिल्म के डायरेक्टर कुकू कोहली के कहने पर उन्होंने फिल्म की।अजय की पहली फिल्म फूल और कांटे की रिलीज से जुड़ा दिलचस्प किस्सा है। यह फिल्म यश चोपड़ा की लम्हे के साथ

रिलीज हुई थी, जिसमें श्रीदेवी और अनिल कपूर जैसे बड़े सितारे थे। उस समय लम्हे को बहुत बड़ी फिल्म माना जा रहा था। अजय ने 'आप की अदालत' में बताया था कि फिल्म के प्रीमियर पर अनिल कपूर उनसे मिलने आए थे। उन्होंने अजय को सलाह दी थी कि इतनी बड़ी फिल्म के सामने अपनी डेब्यू फिल्म रिलीज करना सही फैसला नहीं है। उन्होंने कहा था कि नई कास्ट, नया डायरेक्टर और नया प्रोड्यूसर होने की वजह से यह जोखिम भरा हो सकता है। अजय के मुताबिक, अनिल ने यह सलाह नेक इरादे से दी थी। वे बचपन से उन्हें जानते थे और उनकी मदद करना चाहते थे,

लेकिन जब फिल्में रिलीज हुईं, तो नतीजा उल्टा निकला। लम्हे फ्लॉप हुई, जबकि फूल और कांटे सुपरहिट हुई। किस्सा 4: नहाते वक्त फिल्म जख्म के लिए हामी भरी, मिला नेशनल अवॉर्ड- अजय देवगन ने द ल्लनटॉप को दिए इंटरव्यू में फिल्म जख्म को लेकर बताया था कि यह फिल्म उन्हें अनोखे तरीके से मिली, जब डायरेक्टर महेश भट्ट ने अचानक फोन कर उन्हें कहानी सुनानी शुरू कर दी। अजय ने बताया था कि उस समय वह हैदराबाद में शूटिंग कर रहे थे और होटल के कमरे में थे। उस दौर में मोबाइल नहीं होते थे, इसलिए लैंडलाइन पर कॉल आया। वह शावर ले रहे थे, तभी फोन बजा और उन्होंने कॉल उठाया।फोन पर महेश भट्ट थे। उन्होंने कहा कि वह अपनी जिंदगी की आखिरी फिल्म डायरेक्ट कर रहे हैं और इसके बाद काम छोड़ देंगे। अजय के अनुसार, महेश भट्ट ने बिना समय गंवाए तुरंत फिल्म की कहानी सुनानी शुरू कर दी। अजय ने कहा था कि उन्होंने महेश भट्ट से कहा कि वह नहा रहे हैं और फिल्म कर रहे हैं। इसी तरह फिल्म बनी थी। इस फिल्म में अजय की एक्टिंग की काफी सराहना हुई और इसके लिए उन्हें करियर का पहला नेशनल अवॉर्ड (बेस्ट एक्टर) मिला था। किस्सा 5: पहला नेशनल अवॉर्ड लेने नहीं पहुंचे थे -1998 में फिल्म जख्म के लिए अजय देवगन को जब पहला नेशनल अवॉर्ड मिला था, तब वे इसे लेने के लिए पहुंच नहीं पाए थे। उस समय वे ऊटी में शूटिंग कर रहे थे। दिल्ली जाने के लिए सिर्फ एक फ्लाइट थी, जो उसी दिन कैंसिल हो गई।इस वजह से अजय खुद सेरेमनी में नहीं पहुंच सके। उनकी मां मुंबई से दिल्ली गईं और उनकी ओर से अवॉर्ड रिसीव किया। अजय ने बताया था कि यह उनकी गलती नहीं थी, बल्कि हालात ऐसे थे। हालांकि, वे अपना दूसरा नेशनल अवॉर्ड लेने के लिए खुद पहुंचे थे। फिल्म जख्म के बाद उन्हें बेस्ट एक्टर कैटेगरी में द लीजेंड ऑफ भगत सिंह और 'तान्हाजीः द अनसंग वॉरियर के लिए भी नेशनल अवॉर्ड मिला। किस्सा 6: जावेद जाफरी के खाने में भांग मिला दी थी-अजय देवगन अपने मजाकिया अंदाज और सेट पर प्रैंक करने के लिए जाने जाते हैं। एक्टर जावेद जाफरी ने मिर्ची प्लस को दिए इंटरव्यू में अजय के प्रैंक से जुड़ा एक किस्सा शेयर किया था। यह किस्सा फिल्म 'दे दे प्यार दे 2' की शूटिंग का है। जावेद जाफरी ने बताया था कि महाशिवरात्रि के मौके पर अजय ने मजाक में सेट पर मौजूद खाने में भांग मिला दी थी। जावेद, जो न शराब पीते हैं और न सिगरेट, उन्होंने अनजाने में वही खाना ज्यादा खा लिया। कुछ देर बाद उन्हें अजीब महसूस होने लगा। उन्होंने बताया कि ऐसा लग रहा था जैसे वे ब्लैक होल में गिर रहे हों और आसपास सब कुछ हिल रहा हो। हालत इतनी खराब हो गई कि वे घबरा गए और लगा कि वे बच नहीं पाएंगे। घबराहट में जावेद अपने कमरे में चले गए। उन्होंने अपने असिस्टेंट, पत्नी और बेटे मीजान जाफरी को फोन किया। उन्हें लगा यह उनका आखिरी समय है, इसलिए वे वसीयत लिखवाने को तैयार हो गए थे। बाद में पता चला कि यह अजय देवगन का मजाक था। किस्सा 7: फिल्म पब्लिसिस्ट को ड्रग्स केस का आरोपी बना दिया-अजय देवगन के प्रैंक्स से जुड़ा एक और दिलचस्प किस्सा है।

फिल्म पब्लिसिस्ट राजेंद्र राव को अजय ने प्रैंक कर नकली ड्रग्स के केस में फंसा दिया था। मिड डे को दिए इंटरव्यू में अजय ने इसे स्वीकार किया था। बता दें कि फिल्म पब्लिसिस्ट वह व्यक्ति होता है जो किसी फिल्म या कलाकार की पब्लिसिटी और प्रमोशन संभालता है। राजेंद्र राव ने लगान, स्वदेस और सरफरोश जैसी फिल्मों का प्रमोशन किया था। साल 2003-2004 में अजय देवगन दीव (दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव) में एक फिल्म की शूटिंग कर रहे थे, जिसमें अमीषा पटेल भी थीं। शूटिंग दीव फोर्ट के आसपास चल रही थी। उसी दौरान राजेंद्र राव भी मौजूद थे। वो हंसमुख और मजाकिया इंसान थे, लेकिन उस दिन उनका मूड थोड़ा खराब था क्योंकि उनका एक बैग मुंबई एयरपोर्ट पर छूट गया था। वे बार-बार बैग छूटने वाली बात कर रहे थे। अजय ने सोचा कि क्यों न इस पर एक प्रैंक किया जाए। उन्होंने दीव के सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस से संपर्क किया और पूरा प्लान तैयार किया। उन्होंने चुपके से राजेंद्र राव की जेब में नमक का एक छोटा पैकेट डाल दिया, ताकि बाद में उसे ड्रग्स बताया जा सके। शूटिंग के दौरान अचानक सेट पर पुलिस की एक वैन पहुंची। साथ में सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस भी थे, जो राजेंद्र राव को ढूंढ रहे थे। राजेंद्र को लगा कि उनका बैग मिल गया है, लेकिन मामला अलग निकला। पुलिस ने बताया कि उनके बैग में भारी मात्रा में ड्रग्स मिली है और उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया। सबके सामने उन्हें पकड़कर ले जाया गया। माहौल एकदम सीरियस हो गया। राजेंद्र राव को थाने ले जाकर पूछताछ की गई। उनसे सवाल पूछे गए। तलाशी में उनकी जेब से नमक का पैकेट निकला। पुलिस ने उसे चखकर कहा, 'यह कोकीन है।' यह सुनते ही राजेंद्र बहुत घबरा गए। शाम होते-होते हालत इतनी खराब हो गई कि पुलिस अधिकारी ने अजय देवगन को फोन करके कहा कि अब यह मजाक ज्यादा हो रहा है और इसे खत्म करना चाहिए। करीब 8 बजे शाम को सच्चाई सामने आई और राजेंद्र राव को छोड़ दिया गया। जब राजेंद्र वापस आए, तो वे बेहद नाराज थे। उन्होंने अजय को खूब डांटा और कहा कि ऐसा मजाक कभी किसी के साथ नहीं करना चाहिए। यहां तक कि उन्होंने खुद को होटल के कमरे में करीब 24 घंटे के लिए बंद कर लिया। बाद में दोनों ने साथ बैठकर ड्रिंक की और मामला शांत हुआ। किस्सा 8: शूटिंग के दौरान रसगुल्ले को शराब में भिगोकर खाते थे-अजय देवगन ने शेफ संज्योत कीर को दिए इंटरव्यू में बताया था कि शूटिंग या लंबी यात्राओं के दौरान उनके पास आराम से बैठकर ड्रिंक करने का समय नहीं होता था। ऐसे में उन्होंने एक अनोखा तरीका निकाल लिया, जिसे वे मजाक में 'रसगुल्ला लिकर शॉट' कहते थे। वे सबसे पहले रसगुल्ले को अच्छी तरह निचोड़कर उसकी सारी चाशनी निकाल देते थे। फिर उसे पानी से धोते, ताकि उसका मीठापन पूरी तरह खत्म हो जाए। इसके बाद उस सूखे रसगुल्ले को अपनी पसंदीदा शराब में डाल देते। रसगुल्ला स्पंज की तरह सारी शराब सोख लेता था। अजय ने हंसते हुए कहा था कि इस तरह उन्हें ड्रिंक और चखना दोनों एक साथ मिल जाता था।किस्सा 9: काजोल ने अजय को पहली बार देखकर खड़ूस कहा था-बॉलीवुड में कई लव स्टोरीज आईं और गईं, लेकिन अजय और काजोल की कहानी आज भी एक खास जगह रखती है। यह कहानी किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं लगती, जहां शुरुआत में दोनों एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे, फिर दोस्ती, डेटिंग और शादी तक बात पहुंची। उनकी शादी को 25 साल से ज्यादा हो चुके हैं और बंधन अब भी मजबूत है। साल 1995 में फिल्म 'हलचल' के सेट पर दोनों की पहली मुलाकात हुई। सेट पर जब काजोल ने पहली बार अजय को देखा, तो उन्हें वह काफी अलग लगे। एक कोने में शांत बैठे, कम बोलने वाले अजय को देखकर काजोल ने सोचा था कि वह बहुत खड़ूस इंसान हैं। लेकिन धीरे-धीरे बातचीत शुरू हुई। 'हाय-हैलो' से शुरू हुई ये जान-पहचान जल्द ही दोस्ती में बदल गई। काजोल को एहसास हुआ कि अजय कम बोलते जरूर हैं, लेकिन बेहद समझदार हैं। दोनों उस समय अलग-अलग रिश्तों में थे, लेकिन एक-दूसरे से अपनी बातें शेयर करते थे। यहीं से उनके रिश्ते की नींव पड़ी। समय के साथ दोस्ती प्यार में बदल गई। करीब चार साल तक दोनों ने रिश्ता प्राइवेट रखा। फिर 24 फरवरी 1999 को शादी की। इसमें सिर्फ परिवार और करीबी लोग शामिल हुए। अजय देवगन और रोहित शेट्टी बॉलीवुड की सबसे मजबूत एक्टर-डायरेक्टर जोड़ियों में से एक हैं। रोहित ने अपने करियर की शुरुआत अजय की पहली फिल्म फूल और कांटे में एक असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर की थी। तब से लेकर आज तक दोनों साथ हैं। जब रोहित शेट्टी डायरेक्टर बनना चाहते थे, तब अजय देवगन ने उन पर भरोसा दिखाया और 2003 में फिल्म जमीन से उन्हें पहला ब्रेक दिया। हालांकि, फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नहीं चली। पहली फिल्म फ्लॉप होने के बाद जब रोहित ने अपनी दूसरी फिल्म गोलमाल को लेकर अजय को फोन किया, तो उन्होंने कहा कि तेरे को जो फिल्म बनानी है बना, मैं तेरे साथ खड़ा हूं क्योंकि तेरी पहली फिल्म नहीं चली थी। इसके बाद फिल्म गोलमाल बनी और यह हिट हुई। बाद में इस जोड़ी ने गोलमाल सीरीज और सिंघम जैसी कई ब्लॉकबस्टर फिल्में दी हैं। इनकी फिल्मों ने मिलकर बॉक्स ऑफिस पर 1000 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की कमाई की है। अजय देवगन की अपकमिंग फिल्में-2026 में अजय देवगन की कई बड़ी फिल्में रिलीज होने वाली हैं। हैप्पी बर्थडे जोशी उनकी पहली जेन-एआई फिल्म है, जो सच्ची घटनाओं पर आधारित है और यह आज उनके जन्मदिन के मौके पर रिलीज हो गई है। वहीं, धमाल 4 12 जून 2026 को सिनेमाघरों में आएगी, जबकि दृश्यम 3 2 अक्टूबर 2026 को रिलीज होगी।

'खोदा पहाड़ निकला चूहा', रणबीर की 'रामायणम' टीजर के बाद संजय गुप्ता का पोस्ट, लोगों ने बुरी तरह धोया

मुंबई। रणबीर कपूर स्टारर 'रामायणम' के टीजर के बाद लोगों ने सोशल मीडिया पर अपने ही बुरी तरह धो डाला है। दरअसल कॉमेंट सेक्शन में कई यूजर्स ने उनके ट्वीट को पढ़कर ये अनुमान लगाया कि यह कॉमेंट नितेश तिवारी की पौराणिक महाकाव्य फिल्म के टीज़र पर को लेकर ही उन्होंने किया है। बता दें कि फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम की भूमिका में दिख रहे हैं और इसी के साथ वीएफएक्स की शानदार झलकियां हैं जिसे लेकर ऑनलाइन खूब चर्चा हो रही है। अब जहां संजय गुप्ता ने किसी का नाम तक नहीं लिखा है वहीं लोगों ने उनके पोस्ट के पीछे छिपे इरादे पर सवाल उठाए हैं। इस पोस्ट पर लोगों ने खूब कॉमेंट किए हैं। एक यूजर ने कहा, 'आपने आज तक कितने पहाड़ खोदे वैसे हर बार चूहा ही निकला है।' एक और ने कहा, 'पहाड़ खोदा ही क्यों? ये कहावत सदियों से चल रही है, सबको पता है कि पहाड़ खोदने पे चूहा या चुहिया ही निकलती है, हर कोई दशरत माझी नहीं होता न? क्यों की इतनी मेहनत? खामखा समय बर्बाद किया।' एक और ने कहा, 'सर जब आपके पहाड़ खोदते थे तब अमेरिकी और कोरियाई फिल्मों की सस्ती कॉपी बाहर निकलती थी।' एक और यूजर ने कहा, 'पर आप गए क्यों थे पहाड़ खोदने?'। एक यूजर ने उंगली उठाते हुए कहा, 'पहले खुद देख लें, काबिल के बाद कोई फिल्म आई है क्या?' कई लोगों ने उन्हें सपोर्ट भी किया है। एक ने कहा है, 'मुझे हमेशा से पता था कि ये एआई वर्जन निकलेगा।' वहीं एक अन्य ने कहा, 'यह अच्छा नहीं लगा...मुझे रावण की याद आ गई।' वहीं एक और ने कहा, 'इनलोगों ने तो आदिपुरुष 2 बना दी है।' वहीं एक ने कहा- चूहा फिर भी अच्छा है, ये तो मच्छर निकला। बताया जा रहा है कि रणबीर कपूर की 4000 करोड़ के बजट में बताई जा रही 'रामायणम' का टीजर रिलीज हो गया है। हनुमान जयंती के अवसर पर 2 अप्रैल को रामायणम् का टीजर रिलीज हुआ। प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर करते हुए सभी को राम नवमी की शुभकामनाएं दी देते हुए बताया की हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर 2 अप्रैल को रामायणम् का टीजर रिलीज किया जाएगा. उन्होंने लिखा, 'रामायणम् सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि हर भारतीय की भावना से जुड़ी हुई है। पूरी टीम ने इस प्रोजेक्ट पर जिम्मेदारी और समर्पण के साथ काम किया है, ताकि रामायण को उसके असली रूप और भव्यता के साथ दर्शकों के सामने पेश किया जा सके।' यहां ये भी बता दें कि संजय गुप्ता ने 'रामायणम' को लेकर पहली बार तंज नहीं कसा है। इससे पहले, जब निर्माता नमित मल्होत्रा ने बताया कि दो भागों वाली यह महाकाव्य फिल्म लगभग 4,000 करोड़ रुपये के बजट पर बनी है। इसपर निर्देशक ने ट्विटर पर कहा था, 'मैट्रिक्स, लॉर्ड ऑफ द रिंग्स, अवतार, ड्यून, स्टार वार्स, आदि। सभी फिल्मों में अभूतपूर्व और अभूतपूर्व विज़ुअल इफेक्ट्स का इस्तेमाल हुआ है। किसी ने भी रिलीज से पहले इस बारे में बात नहीं की। उन्होंने अपने काम को खुद बोलने दिया।' हालांकि, तब भी उन्होंने बिना किसी का नाम लिए हुए ही अपनी शिकायत लोगों के सामने रखी थी।

अजय देवगन ने जन्मदिन पर फैंस को दिया तोहफा,ओटीटी पर रिलीज की फिल्म 'हैप्पी बर्थडे जोशी'

मुंबई। बॉलीवुड सुपरस्टार अजय देवगन गुरुवार, 02 अप्रैल 2026 को 57 साल के हो गए हैं। साल 1991 में 'फूल और कांटे' से डेब्यू करने वाले अजय ने इस खास मौके पर अपने फैंस को एक शानदार तोहफा दिया है। उन्होंने अपने प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनी सच्ची घटनाओं से प्रेरित शॉर्ट फिल्म 'हैप्पी बर्थडे जोशी' ओटीटी पर रिलीज की है। 15 मिनट की इस फिल्म की खास बात यह है कि ये पूरी तरह से एआई से बनी है। इस फिल्म को अंशुल कुमार शर्मा ने डायरेक्ट किया है, जबकि अजय देवगन और दानिश देवगन ने इसे प्रोड्यूस किया है। अजय देवगन ने अपने भतीजे दानिश देवगन के साथ हाल ही लेन्स वॉल्ट स्टूडियोज नाम के प्रोडक्शन होउस की शुरुआत की है। यह इस प्रोडक्शन की पहली फिल्म है। दानिश, अजय देवगन के दिवंगत भाई अनिल देवगन के बेटे हैं। वह इससे पहले अपने चाचा के साथ 'तान्हाजी' और 'रनवे 34' जैसी असिस्टेंट डायरेक्टर और क्रिएटिव प्रोड्यूसर के तौर पर काम कर चुके हैं। 'हैप्पी बर्थडे जोशी' शॉर्ट फिल्म को सीधे यूट्यूब पर रिलीज किया गया है। आप इसे Lens Vault Studios के यूट्यूब चैनल पर मुफ्त में देख सकते हैं। अंशुल कुमार शर्मा के डायरेक्शन में बनी फिल्म Happy Birthday Joshi सच्ची घटनाओं से प्रेरित है। यह मुंबई में रहने वाले एक छोटे शहर के कंप्यूटर जीनियस की कहानी है, जो अपनी निराशा भरी जिंदगी को एक ऐसी डिजिटल क्रांति में बदल देता है, जिससे पूरी दुनिया उसका नाम याद रखने पर मजबूर हो जाती है। यह 1990 के दशक में सेट 'जोशी' की असली कहानी है, जो भारत का पहला कंप्यूटर वायरस था। फिल्म एक डिजिटल थ्रिलर के रूप में आगे बढ़ती है, जिसमें 'जोशी वर्म' पूरी दुनिया में तबाही मचा देता है। यह वायरस कंप्यूटर को तब तक फ्रीज कर देता था, जब तक कि यूजर्स 'हैप्पी बर्थडे जोशी' टाइप नहीं कर देते थे। यह वायरस इतनी तेजी से फैलता है कि इसे रोकने के लिए एक बेहद जुझारू टीम की जरूरत पड़ती है।इस शॉर्ट फिल्म को एक 'जेन-एआई' थ्रिलर बताया गया है, जो एआई तकनीक को फिल्म-निर्माण के साथ मिलाकर एक प्रयोगात्मक कहानी कहती है। मेकर्स अजय देवगन और दानिश देवगन का कहना है कि यह फिल्म एलवीएस की कहानी कहने की महत्वाकांक्षा का एक नया आयाम दिखाती है। यह एआई-आधारित विज़ुअल कहानियों से आगे बढ़कर पूरी तरह से एआई-निर्मित शॉर्ट-फॉर्म सिनेमा की ओर बढ़ रही है। इसे स्टूडियो के अपने इन-हाउस जेनरेटिव एआई और क्रिएटिव टेक्नोलॉजी इंजन Prismix Studios ने बनाया है।'हैप्पी बर्थडे जोशी' की कहानी 'टार्जन' फेम वत्सल सेठ ने लिखी है। शॉर्ट फिल्म की रिलीज पर Lens Vault Studios के चेयरमैन, अजय देवगन कहते हैं, 'स्टूडियो की कल्पना हमने एक ऐसी जगह के तौर पर की गई थी, जहां कहानी कहने के नए-जमाने के तरीकों को आजमाया जा सके, जो आज के दर्शकों को पसंद आएं। यह फिल्म इसी सोच का एक आईना है, जहां टेक्नोलॉजी और भावनाएं एक साथ मिलती हैं।'

खेसारी लाल यादव पर किसने फेंका जूता? पशु मेले में स्टेज पर आते ही चले लात-घूसे, तोड़फोड़, लाठीचार्ज

मुजफ्फरपुर। भोजपुरी सिनेमा के सुपरस्टार खेसारी लाल यादव के कार्यक्रम में जमकर तोड़फोड़, मारपीट और पुलिस लाठीचार्ज की खबर आ रही है। यह मामला बिहार के मुजफ्फरपुर का है, जहां पशु मेले में बुधवार को खेसारी लाल यादव भी पहुंचे थे। बताया जाता है कि वह जैसे ही मंच पर गाने के लिए चढ़े, दर्शकों के बीच से हूटिंग शुरू हो हुई। देखते ही देखते मंच की ओर जूते-चप्पल फेंके जाने लगे। बवाल बढ़ा तो तोड़फोड़ शुरू हो गई, लात-घूसे चलने लगे। पुलिस ने हालात पर काबू पाने के लिए लाठीचार्ज किया। इस दौरान 3 पुलिसकर्मियों के घायल होने की खबर आ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, मुजफ्फपुर जि?ले में आयोजि?त पशु मेले में बुधवार शाम को खेसारी लाल यादव का कार्यक्रम पहले से तय था, इस कारण वहां भारी संख्?या में भीड़ थी। इसमें सिंगर-एक्?टर के फैंस भी थे। हालांकि, वह जैसे ही स्?टेज पर गाने के लिए आगे बढ़े हूटिंग शुरू हो गई। भीड़ में से जूते-चप्?पल फेंके जाने लगे। इस कारण दर्शक दीर्घा में फैंस और बवालि?यों के बीच झगड़ा शुरू हो गया। देखते ही देखते माहौल बिगड़ गया। तोड़फोड़ होने लगी। लोग कार्यक्रम छोड़कर भागने को मजबूर हो गए। आयोजकों ने कार्यक्रम को बीच में ही रोक दिया। सोशल मीडिया पर इस घटना के वीडियोज वायरल हो रहे हैं। पुलिस को हुड़दंगियों की भीड़ को काबू में लाने के लिए लाठीचार्ज करते हुए भी देखा जा रहा है। हालांकि, इसमें 3 पुलिसकर्मी ही घायल हो गए हैं। चौंकाने वाली बात यह भी है कि दो दि?न पहले भी इसी मेले में स्टेज पर डांसरों के बीच भी मारपीट हुई थी। जानकारी के लिए बता दें कि औराई विधानसभा क्षेत्र के पूर्व भाजपा विधायक रामसूरत राय बीते कई साल से मुजफ्फरपुर के गरहा में इस पशु मेले का आयोजन करवा रहे हैं। बुधवार को जब यह घटना हुई, तब कथि?त तौर पर मेले पर हजारों की संख्?या में लोग मौजूद थे। वायरल वीडियो में भी साफ दिख रहा है कि लोग स्टेज की तरफ जूते-चप्पल बरसा रहे हैं। जबकि पुलिस इन उपद्रवियों पर लाठीचार्ज कर रही है। मुजफ्फरपुर के वरीष्?ठ पुलिस अधीक्षक कांतेश कुमार मिश्रा ने इस पूरा घटना का दोष मेला प्रबंधन पर मढ़ा है। लापरवाही का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा, 'मेला प्रबंधन ने पुलिस को पूर्व में जो सूचना दी थी, उसके मुताबिक वहां 30 से 40 हजार लोगों के जमा होने की संभावना थी। लेकिन इस कार्यक्रम में एक से डेढ़ लाख लोग पहुंच गए थे। इस कारण पुलिस प्रशासन को काफी मशक्कत करना पड़ी। इस पूरे घटनाक्रम में हमारे 3 पुलिसकर्मी घायल हो गए हैं।' हालांकि, अभी तक यह बात सामने नहीं आई कि उपद्रव की शुरुआत करने वाले लोग कौन थे।

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।